Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत् उवाच

सामाइयमाहु तस्स जं,
जो अप्पाण भए ण दंसए।

जो भय से विचलित नहीं होता, उस साधक के सामायिक होता है।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 15 • 16 - 22 जनवरी, 2023 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 14-01-2023 • पेज : 16 • ₹ 10

त्रिदिवसीय वर्धमान महोत्सव का भव्य शुभारंभ

ज्ञानार्जन की दिशा में वर्धमान बने हमारा धर्मसंघ : आचार्यश्री महाश्रमण

बालोतरा, ६ जनवरी, २०२३

औद्योगिक क्षेत्र बालोतरा, जहाँ हमारे परमपूज्य जयाचार्य ने वि०सं० १६२१ की माघ शुक्ला सप्तमी को मर्यादा महोत्सव का शुभारंभ किया था। वर्तमान में जयाचार्य के परंपर पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमण जी वर्धमान महोत्सव का आयोजन करने पधारे हुए हैं।

वर्धमान स्कूल के वर्धमान समवसरण में वर्तमान में वर्धमान के सान्निध्य में वर्धमान महोत्सव का शुभारंभ वर्धमान के प्रतिनिधि के द्वारा नमस्कार महामंत्र के सम्मुच्चारण से हुआ।

परम पावन ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में फरमाया कि अरिष्टनेमि ने वासुदेव को मानो मंगलकामना के रूप में कहा–ज्ञान-दर्शन, चारित्र शांति और मुक्ति में वर्धमान रहो, वर्धमान बनो। मानो, दीक्षित होने वाले के लिए एक मंगलभावना है।

हमारी दुनिया में मंगलकामना में भी लगता है कुछ तत्त्व होता है। आदमी स्वयं के लिए भी मंगलकामना कर सकता है और दूसरों के लिए भी मंगलकामना कर सकता है। अंतर्मन से दूसरों के लिए मंगलकामना की जाए यह मानो आदमी की उदारता है। आज त्रिदिवसीय वर्धमान महोत्सव का प्रारंभ हुआ है। मर्यादा महोत्सव से पूर्व पिछले कई वर्षों से इस महोत्सव की आयोजना होती है। एक बड़े समारोह की पृष्ठभूमि में एक छोटा समारोह आयोजित होता है।

वर्धमान महोत्सव में वर्धमान शब्द हमारे परम श्रद्धेय परमात्मा भगवान महावीर का नाम है। जो अपने आपमें मंगल रूप में है। वर्धमान यानी बढ़ता हुआ। चातुर्मास के बाद हमारे यहाँ चारित्रात्माओं की संख्या वर्धमान हो जाती है। आज के दिन ४५ संत १०६ साध्वियाँ और २६ समणियाँ हैं। गत छापर चातुर्मास से संख्या वर्धमान है। शासन में साधु-साध्वियों की संख्या बढ़े ऐसी वर्धमानता हो। मुमुक्षुओं की संख्या भी वर्धमानता होती रहे। गुणवत्ता भी बढ़े।

ज्ञान में वर्धमानता हो। महाप्रज्ञ श्रुत साधना पाठ्यक्रम व कई संघीय पाठ्यक्रम है, जिनसे ज्ञान में वर्धमानता हो सकती है। रात्रि में मूर्तिपूजक संत भी तत्त्वज्ञान की चर्चा में आए थे। यह सारस्वत साधना है, इसमें पुरुषार्थ चाहिए। जो ज्ञान ग्रहण किया है, उसका चितारणा होता रहे। दसवेंआलियं मूल पूँजी है, इसे सुरक्षित रखने का प्रयास करें। बाल साधु-साध्वियाँ इसे सहचर बनाकर रखे।

ज्ञान की गहराई में जाने का प्रयास करें। भाषण शैली अच्छी हो। ज्ञान और अनुभव भाषण की आत्मा है। ज्ञान का विकास हमारे धर्मसंघ में वर्धमान रहे यह काम्य है। साधु-साध्वियों व समणियों को प्रतिदिन एवं साप्ताहिक दसवेंआलियं का स्वाध्याय करने का (यथासंभव) संकलप करवाए। उत्तराध्ययन के कई अध्ययन की याद करने की प्रेरणा दिलवाई।

श्रावक समाज को भी भिक्षु विचार दर्शन एवं तेरापंथ प्रबोध का बार-बार स्वाध्याय करने का प्रयास करें, गहराई में जाएँ, वर्धमानता रहे।

पूज्यप्रवर के स्वागत में समणीवृंद द्वारा गीत, सिवांची-मालाणी समणीवृंद व मुमुक्षु बहनों द्वारा गीत, साध्वी विजयप्रभा जी, साध्वी जिनबाला जी, साध्वी शताब्दीप्रभा जी, साध्वी कमलप्रभा जी व साध्वी जिनबाला जी के सिंघाड़े की साध्वियों ने गीत, मुमुक्षु प्रियंका ओस्तवाल, साध्वी प्रमोदश्री जी, साध्वी रतिप्रभा जी समूह गीत, समणी संचितप्रज्ञा जी, मुमुक्षु दीप्ति वेद मूथा, मुमुक्षु रक्षा ओस्तवाल, महिला मंडल अध्यक्ष निर्मला संकलेचा, कन्या मंडल समूह गीत, तेयुप ने समूह गीत से अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

टीना श्रीमाल ने पूज्यप्रवर से २५ की तपस्या के प्रत्याख्यान लिए। कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने कर्मों के उदय से होने वाले कर्मफलों को विस्तार से समझाया।

त्याग-तपस्या है साधु का सबसे बड़ा धन : आचार्यश्री महाश्रमण

बालोतरा, ८ जनवरी, २०२३

राजस्थान का कपड़े की रंगाई और छपाई का मुख्य केंद्र बालोतरा है, त्रिदिवसीय वर्धमान महोत्सव के उपलक्ष्य में तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता बालोतरा पधारे।

वर्तमान के वर्धमान ने नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ वर्धमान महोत्सव का शुभारंभ किया। प्रभु वर्धमान की स्तुति करते हुए आचार्यप्रवर ने फरमाया कि तपस्या एक आध्यात्मिक जगत का शब्द है। साधना से जुड़ा हुआ तप है। साधु निर्ग्रन्थ होते हैं।

साधु पैसे से तो निर्धन हैं। परंतु साधु के पास ऐसा धन हो सकता है, जो अपने आपमें बहुत कल्याणकारी हो सकता है। निर्ग्रन्थ का धन है, तपस्या। योग साधना, कषायमुक्तता की साधना साधु का धन है। फिर ज्ञान हो तो ज्ञान भी साधु का धन है। केवलज्ञान साधु में ही हो सकता है। केवल ज्ञान तो परम उच्च कोटि का हो जाता है। साधु के पास जो धन है, वो गृहस्थों के पास होना मुश्किल होता है।

आचार्यश्री ने एक प्रसंग से समझाया कि जिसके पास भौतिक संपत्ति नहीं है, जो अकिंचन बन गया, सारा परिग्रह छोड़ दिया वह सारी दुनिया का मालिक है। वही सच्चा साधु है, वह सच्चा गुरु बन सकता है। अमीरी तो फकीरी के सामने झुकती है। जिस साधु के जीवन में तपस्या है, त्याग है, कंचन कामिनी का त्यागी है, यही साधु का धन है। इसलिए साधु को तपोधन कहा गया है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

✦ *विलासिता एवं आसक्ति से मन को हटाएँ तथा अटेचमेंट से डिटेचमेंट की ओर आगे बढ़ें।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

जसोल में कीर्तिमान-सजोड़े संथारा गतिमान

आत्मिक सुख पाने के लिए आत्मा पर अनुशासन करना अपेक्षित : आचार्यश्री महाश्रमण

जसोल, ६ जनवरी, २०२३

तेरापंथ के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी राणी भटियाणी माजीसा के मंदिर से विख्यात जसोल शहर में धवल सेना संग पधारे। जसोलवासियों ने महातपस्वी का स्वागत तपस्याओं के माध्यम से किया। पदार्पण के साथ ही आचार्यप्रवर ने जसोल भी तेरापंथ का एकरंगा क्षेत्र है। पूज्यप्रवर ने संथाररत पुखराज संकलेचा को दर्शन दिलाए एवं पुखराज की धर्मपत्नी गुलाबीदेवी संकलेचा ने भी तिविहार संथारे का प्रत्याख्यान पूज्यप्रवर से ग्रहण किया। जोड़े से संथारा हुआ है।

भवसागर तारक आचार्य श्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि अध्यात्म जगत का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है—आत्मवाद। यह आत्मवाद इतना आधारभूत सिद्धांत है कि लगता है ये साधुत्व की साधना, विशेष धर्माराधना यह सारी तभी सार्थक हो सकती है, जब आत्मवाद का सिद्धांत सही और मान्य हो।

आत्मा का त्रिकालिक और शाश्वत अस्तित्व है। आत्मा और शरीर दोनों अलग-अलग बताए गए हैं। कुमार श्रमण केशी और राजा परदेशी को पढ़ा जाए तो उससे नास्तिकवाद की भी जानकारी मिल सकती है। नास्तिकवाद के खंडन को भी समझा जा सकता है।

नास्तिकवाद का सिद्धांत है कि आत्मा-शरीर एक है, पर आस्तिकवाद का सिद्धांत है कि शरीर अलग है, आत्मा अलग है। साधुत्व की साधना का आधार आस्तिकवाद ही है। आत्मा शाश्वत है तो फिर पुनर्जन्म की बात भी सिद्ध हो सकती है। बार-बार जन्म-मरण होता है, इससे छुटकारा पाने के लिए आध्यात्म की साधना की जाती है।

कोरी आत्मा जीवन नहीं, कोरा शरीर जीवन नहीं। दोनों का संयोग है तो जीवन है। आत्मा पर अनुशासन करना बड़ा कठिन काम है। जिसने आत्मा पर संयम कर लिया वह सुखी आदमी है। आत्मिक सुख पाने के लिए आत्मा पर अनुशासन करना अपेक्षित है।

शब्द और अर्थ का अपना-अपना महत्त्व है। अर्थ समझने पर शब्द का महत्त्व हो जाता है। आत्मा अमूर्त है पर हम शरीर, वाणी, मन और इंद्रियों को तो जानते हैं। हम शरीर, वाणी, मन और इंद्रियों पर अनुशासन कर लें तो आत्मानुशासन हो जाएगा। आत्मानुशासन के ये चार आयाम हैं, इनका निरंतर अभ्यास हो।

समस्या हो सकती है, पर तपस्या की साधना हो तो समस्या होने पर भी शांति में रह सकते हैं। समस्या के साथ भी मैत्री कर लें। समस्या को समस्या न मानें। हम मनोबल से आत्मानुशासन की साधना करने का प्रयास करें।

आज दस बरसों बाद जसोल आना हुआ है। साध्वियों के चार सिंघाड़ों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि यह वही जसोल है, जब मुनि जीत बालोतरा चातुर्मास करने के लिए जसोल पधारे थे। लोग उनको पहचान नहीं पाए थे। पर आज तो श्रद्धा का सैलाब उमड़ रहा है। साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी सालेचा परिवार से हैं। सिवांची-मालाणी के छोटे-छोटे क्षेत्रों में पूज्यप्रवर के दीर्घ प्रवास की अर्ज की जा रही है।

अपनी जन्मभूमि पर अपने आराध्य का स्वागत करते हुए साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि हर धर्म में आराध्य की आराधना की जाती है। जब मैं आचार्यप्रवर के व्यक्तित्व को निहारती हूँ तो मुझे महसूस होता है कि आप मर्यादा परम पुरुषोत्तम हैं। आप कोई भी मर्यादा का अतिक्रमण नहीं करते हैं, मर्यादा के प्रति पूर्ण जागरूक रहते हैं। आप अनुत्तर महायोगी, महा-यायावर हैं। आज मैं दीक्षा, शिक्षण प्रदाता और भाग्य-विधाता का अपनी जन्म-भूमि पर अभिवंदना करती हूँ।

अपनी दीक्षा भूमि पर अभिवंदना व्यक्त करते हुए मुख्यमुनि महावीर कुमार जी ने कहा कि आचार्यप्रवर आज मालाणी की धरा जसोल पधारे हैं। मेरा भी यहाँ से संबंध है। यहाँ मेरे अनंत जन्मों की पुण्याई जागृत हुई थी। परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी द्वारा मुझे संयम जीवन स्वीकार करने का महान अवसर प्राप्त हुआ था। पर मेरा केश लोच उस समय युवाचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा हुआ था।

पूज्यप्रवर के स्वागत में सभाध्यक्ष उषभराज तातेड़, महिला मंडल, कन्या मंडल, ज्ञानशाला प्रशिक्षिका समूह गीत, जसोल के रावल किशन सिंह, जसोल से संबंधित साध्वीवृंद द्वारा समूह गीत एवं प्रस्तुति, साध्वीवृंद गीत से पूज्यप्रवर की अभिवंदना की।

साध्वीवर्या जी के नातिले सालेचा परिवार ने पंचरंगी तप के प्रत्याख्यान लिए। जसोलवासियों ने १०८ उपवास से पूज्यप्रवर का स्वागत किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

त्याग-तपस्या है साधु का सबसे...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

परिषह सहन करना भी तप है। साधु इस धन की सुरक्षा करे। मोहनीय कर्म लुटेरा बन वह धन चुरा सकता है। संयम रत्न और सम्यक्त्व रत्न ये दो रत्न सुरक्षित रहें। गृहस्थ को भी इनका जितना हो सके पालन कर उसकी सुरक्षा करने का प्रयास करना चाहिए। गृहस्थ भी तपोधन बन सकते हैं।

आज बालोतरा आए हैं। आज भी कई सिंघाड़े मिले हैं। सभी साध्वियाँ खूब अच्छा काम करने का प्रयास करें।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय सभाध्यक्ष धनराज ओस्तवाल, नगरपालिका अध्यक्षा सुमित्रा वेद मूथा, स्वागताध्यक्ष देवराज खींवेसरा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। तेरापंथ समाज द्वारा गीत से आचार्यप्रवर की अभ्यर्थना की गई।

पूज्यप्रवर के स्वागत-अभ्यर्थना में कई तपस्वियों ने बड़ी तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्यप्रवर से स्वीकार किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

इच्छाओं का अतिरेक व्यक्ति को पतन की ओर ले जाता है : आचार्यश्री महाश्रमण

असाढ़ा, ३ जनवरी, २०२३

तेरापंथ धर्मसंघ का इकरंगा क्षेत्र असाढ़ा। तीर्थंकर तुल्य आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः लगभग १२ किलोमीटर का विहार कर असाढ़ा पधारे। असाढ़ा पदार्पण पर असाढ़ावासियों ने आचार्यप्रवर सहित संपूर्ण धवल सेना का भव्य स्वागत अभिनंदन किया।

परम पावन ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी के भीतर इच्छाएँ भी होती हैं। सामान्य जन में इच्छा का होना सामान्य-सी बात है। इच्छा संतुलित है, तब तक तो ठीक है। इच्छा-लोभ ज्यादा बढ़ जाए तो वह एक धातव्य बात हो जाती है। इच्छाओं का अतिरेक आदमी को पतन की ओर ले जाने वाला और अध्यात्म से बहुत दूर ले जाने वाला बन सकता है।

इच्छाओं का संयम करना निश्चय नय की दृष्टि से अच्छा है और व्यावहारिक जगत में भौतिक रूप में इच्छा हो तो वह आदमी को तनावग्रस्त भी बना सकती है। आदमी इच्छाओं का परिसीमन करे। इच्छाएँ दो प्रकार की होती हैं—प्रशस्त इच्छा और अप्रशस्त इच्छा। प्रशस्त इच्छा भले करो, जैसे मैं ज्ञान-अध्ययन का विकास करूँ। मेरा श्रुत बढ़े। जप खूब करूँ, मैं सुपात्र दान दूँ।

ज्यादा खाना अप्रशस्त इच्छा है। खूब धन चाहिए यह भी अप्रशस्त इच्छा है। इनका संयम होना चाहिए। इच्छा का परिमाण करो। संतों के आने से लोगों को प्रवचन का लाभ मिल सकता है। चेतना प्रणम्य है, अचेतन तत्त्व प्रणम्य नहीं है। इच्छाएँ आकाश के समान अनंत हो सकती हैं। भौतिक इच्छाओं का परिसीमन कर आदमी सुखी रह सकता है।

अति संग्रह करना भी चोरी है, ये ठीक नहीं है। येन-केन इच्छाओं की पूर्ति करना मानवता के लिए ठीक बात नहीं है। दुर्जन स्वर्ग में जाकर सज्जन बन सकते हैं, तो सज्जन नरक में जाकर दुर्जन बन जाएँ, क्या पता? सज्जनता हमारे भीतर है। भाव शुद्धि है, तो कहीं भी जाएँ वो सज्जन ही रहेगा। अणुव्रत-प्रेक्षाध्यान आदमी को अच्छा बनाने में अध्यात्म की दिशा में आगे बढ़ाने वाले हैं।

सेवा की भावना के साथ अच्छा इंसान बनें। सज्जनता जीवन में रहे। नैतिक मूल्यों का जीवन में महत्त्व है। इच्छाओं का परिसीमन हो।

आचार्यप्रवर ने फरमाया कि असाढ़ा से अनेक चारित्रात्माएँ धर्मसंघ में दीक्षित हैं। संपूर्ण असाढ़ावासियों में धर्म की अच्छी भावनाएँ रहें।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

मर्यादा महोत्सव पर विशेष

उत्सवों का सरताज है मर्यादा महोत्सव

❒ मुनि कमल कुमार ❒

जैन धर्म के मुख्य दो संप्रदाय हैं–दिगंबर और श्वेतांबर। श्वेतांबर में ३ संप्रदाय हैं–मूर्तिपूजक, स्थानकवासी और तेरापंथ। तेरापंथ जैन धर्म का सबसे छोटा और जैन धर्म का नया संस्करण है। इस धर्मसंघ की शुरुआत आचार्य भिक्षु ने विक्रम संवत् १८१७ आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा के दिन राजस्थान के मेवाड़ संभाग के केलवा नगर में तेले की तपस्या से की।

आचार्य भिक्षु का लक्ष्य पंथ चलाने का नहीं बल्कि शुद्ध साधना का था। उस समय साधुओं में शिथिलाचार बढ़ने लगा था। सब अपने-अपने शिष्य बनाने और स्थान बनाने में लगे हुए थे। जनता की साधुओं के प्रति श्रद्धा घटती जा रही थी।

ऐसी विषम स्थिति को देख आचार्य भीखण जी ने विक्रम संवत् १८१६ चेत्र सुदी नवमी के दिन मारवाड़ के कांठा संभाग के बगड़ी नगर से अभिनिष्क्रमण किया।

उस समय आपको आहार-पानी, स्थल, वस्त्र आदि के लिए काफी संघर्ष सहन करना पड़ा। परंतु आपका फौलादी संकल्प आपके मनोबल को डिगा नहीं सका।

ज्यों-ज्यों समय बीतता गया लोगों में आपके प्रति श्रद्धा बढ़ने लगी। आपकी वैराग्य वृद्धि एवं साधना आराधना को देखकर आने वाले आपके श्रद्धावन बनते गए और श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ती गई एवं दीक्षा का क्रम भी आरंभ हो गया।

विक्रम संवत् १८३२ में आपने संघ की श्रीवृद्धि देखकर उसकी सुव्यवस्था के लिए प्रथम लेख पत्र लिखा और अपने उत्तराधिकारी का विधिवत् चयन किया।

उसके बाद संघ की सुव्यवस्था के लिए समय-समय पर कई लेख पत्र लिखे। अंतिम मर्यादा पत्र विक्रम संवत् १८५९ माघ शुक्ला सप्तमी के दिन लिखा गया था। उसी मर्यादा पत्र को आधार मानकर चतुर्थ आचार्य श्रीमद् जयाचार्य ने माघ शुक्ला सप्तमी के दिन विधिवत् मर्यादा महोत्सव मनाना प्रारंभ किया।

तब से लेकर आज तक केवल एक महोत्सव को छोड़कर यह उत्सव व्यवस्थित रूप में मनाया जा रहा है। वह एक महोत्सव बीकानेर में राज्य शोक होने पर विधिवत् नहीं माना गया।

१५६ वर्षों से मनाए जाने वाले मर्यादा महोत्सव का आकर्षण संघ के आबाल वृद्ध में देखते ही बनता है। देश-विदेश में रहने वाले साधु-साध्वी, समण-समणी व श्रावक-श्राविका इस महोत्सव में पहुँचकर बाग-बाग हो जाते हैं।

महोत्सव पर तीन दिवसीय कार्यक्रम होता है। बसंत पंचमी से सप्तमी तक चलने वाले कार्यक्रम की शुरुआत तेरापंथ धर्मसंघ के वृद्ध, रुग्ण साधु-साध्वियों की चाकरी की घोषणा से होती है। तेरापंथ धर्मसंघ में विकसित होने वाले साधु-साध्वियों को जीवन-पर्यंत सेवा सुश्रुषा की कोई चिंता नहीं रहती।

आचार्य स्वयं उचित, याचित, अयाचित व्यवस्था करते हैं। यह अपने आपमें एक उदाहरण है।

मर्यादा महोत्सव पर चार तीर्थ को वर्षभर के लिए नई ऊर्जा की प्राप्ति होती है। गुरुदेव वर्षभर में करणीय कार्य की दिशा प्रदान करते हैं। साधु-साध्वियों की साधना वारना भी होती है।

जिससे संघ का प्रत्येक सदस्य ज्ञानवान और प्राणवान बना रहे। परिवार, समाज और संगठन में साधना वारना नहीं होती। वह परिवार, समाज और संगठन दीर्घजीवी नहीं बनता।

तेरापंथ समाज में यह मर्यादा महोत्सव इस त्रिपदी के कारण स्वस्थ और विश्वस्त बना हुआ है।

मर्यादा महोत्सव पर चातुर्मास की नियुक्तियाँ भी होती हैं। सभी लोग अपने-अपने क्षेत्र की अर्ज के साथ प्रस्तुत होते हैं। जिन्हें जिस साधु-साध्वियों का चौमासा मिलता है। उसे अपना सौभाग्य समझते हैं। यह तेरापंथ धर्मसंघ की बहुत बड़ी विशेषता है। यहाँ केवल नातीलो के सिवाय किसी का व्यक्तिगत चौमासा नहीं माँग सकते। कोई अगर ऐसी भूल करता है तो उसे उपालंभ या दंड भी मिल सकता है। ऐसा अतीत में हुआ है और भविष्य में भी संभव है। यहाँ केवल गुरु चरणों में अपने क्षेत्र में चातुर्मास की अर्ज की जा सकती है। आचार्य जैसा उपयुक्त समझते हैं वैसा निर्णय कर किसी भी साधु-साध्वियों का चौमासा फरमा सकते हैं, निर्णय सिर्फ आचार्य के हाथ है उसमें कोई भी हस्तक्षेप नहीं कर सकता।

इन्हीं सब विशेषताओं के कारण तेरापंथ धर्मसंघ पूरे जैन समाज में अनुपम और अद्वितीय है।

इस वर्ष का मर्यादा महोत्सव बायतू राजस्थान में महातपस्वी महामनस्वी शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी के पावन सान्निध्य में मनाया जा रहा है। वहाँ प्रथम बार मर्यादा महोत्सव होने से साधु-साध्वियों एवं श्रावक-श्राविकाओं में विशेष उत्साह दृष्टिगोचर हो रहा है।

गुरुदेव की देश-विदेश में जो अहिंसा यात्रा हुई है वह अपने आपमें अनुपम, अद्वितीय और धर्मसंघ की महत्ता को बढ़ाने वाली सिद्ध हुई है। गाँव-गाँव, घर-घर में चर्चा का विषय बनी है। इस यात्रा से आबाल वृद्धों को ही नहीं शिक्षित, व्यापारी, कर्मचारी, राजनेता, धार्मिक नेताओं पर भी अच्छा प्रभाव देखने में सुनने को मिला है। गुरुदेव की प्रबल पुण्य और पुरुषार्थ के सामने सभी नतमस्तक हो गए।

मर्यादा महोत्सव तेरापंथ का विशेष उत्सव है सैकड़ों साधु-साध्वियों के एक साथ दर्शन होने से लोग संघबद्ध आते हैं और अन्य समाज के लिए भी केवल दर्शनीय ही नहीं प्रशंसनीय और अनुकरणीय है, ऐसे विचार भी सुनने को मिलते हैं।

इच्छाओं का अतिरेक व्यक्ति को पतन की...

(पृष्ठ २ का शेष)

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि तराजू के एक पलड़े में सत्संग के सुखों को रखें, दूसरे पलड़े में स्वर्ग के सुखों को रखें; तो सत्संग के सुख का पलड़ा भारी रहेगा। सत्संग में बड़ा सुख है। सज्जन व्यक्ति का सान्निध्य स्वर्ग का अनुभव कराता है। आचार्यप्रवर के आभामंडल से ऐसी किरणें निकलती हैं, जिसमें हर प्राणी सुख की अनुभूति करता है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में साध्वी भावितप्रभा जी, साध्वी ऋषिप्रभा जी, समणी पुण्यप्रज्ञा जी, असाढ़ावासी मुमुक्षु अंजली ने अपनी श्रद्धासिक्त भावना व्यक्त की।

पूज्यप्रवर के स्वागत में तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ समाज, व्यवस्था समिति संयोजक बाबूलाल सिंघवी, उपासक जवेरीलाल संकलेचा, तेयुप से पीयूष बालड़, सरपंच प्रतिनिधि गणपतसिंह बाबेचा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। टीपीएफ द्वारा नववर्ष का कैलेंडर श्रीचरणों में अर्पित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि सामायिक करने से श्रावक कुछ समय के लिए साधु-सा बन जाता है।

मर्यादा जीवन है

● शासनश्री मुनि विजय कुमार ●

मर्यादा जीवन है, मर्यादा ही धन है,
मर्यादा मधुवन है, मर्यादा पावन है,
मर्यादा वेदी पर अर्पित यह तन मन है।।

श्री भिक्षु ने इस कलियुग में मर्यादा को मान दिया,
जयाचार्य ने इसे महोत्सव का आकार प्रदान किया,
मर्यादा की धुन पर टिका हुआ शासन है।।1।।

मर्यादा के परकोटे में सदा सुरक्षित संघ रहे,
पाकर सिंचन अनुशास्ता का रोगमुक्त हर अंग रहे,
मर्यादा परिमल से सुरभित यह गणवन है।।2।।

मर्यादा का पतन हुआ जब तभी धर्म का नाश हुआ,
मानव मन स्वच्छंद हुआ तब और मलिन इतिहास हुआ,
मर्यादा से मुखरित धरती का कण-कण है।।3।।

मंगलकारी है मर्यादा हम इसका अनुगमन करें,
मर्यादा की पगडंडी पर चलकर पग-पग 'विजय' वरें,
श्रद्धा से मर्यादा को करते वंदन हैं।।4।।

लय : तुम दिल की धड़कन में रहते हो-----

त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान साधना शिविर का आयोजन

नई दिल्ली, महरौली।

जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा-दिल्ली, अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास एवं तेरापंथ सभा-दक्षिण दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में अध्यात्म साधना केंद्र, महरौली में मुनि जयकुमार जी के सान्निध्य में त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान साधना शिविर का आयोजन किया गया। विभिन्न सत्रों में मुनि जयकुमार जी एवं मुनि मुदित कुमार जी ने प्रेक्षाध्यान के विविध प्रयोग करवाए। मध्यकालीन सत्रों में मुनि जयकुमार जी ने शिविरार्थियों की विभिन्न जिज्ञासाओं का समुचित समाधान दिया। अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी के०सी० जैन एवं अन्य प्रशिक्षकों के कुशल निर्देशन में इस शिविर का सफल आयोजन हुआ। सभा के प्रेक्षाध्यान प्रभारी विमल गुनेचा, आयोजन संयोजक हीरालाल गेलड़ा एवं संजय संचेती का उल्लेखनीय श्रम रहा। शिविर समापन सत्र में शिविरार्थियों ने अपने अनुभव साझा किए।

सोहनी देवी नौलखा का अनशन संपन्न

फरीदाबाद।

समणी डॉ० मंजुप्रज्ञा जी एवं समणी स्वर्णप्रज्ञा जी के सान्निध्य में सोहनी देवी नौलखा धर्मपत्नी स्व० गौरीशंकर नौलखा ने ४ दिन संलेखना, १८ दिन का तीविहार और ढाई छं का चौबिहार अनशन संपन्न किया। बहन की जागरूकता अंतिम समय तक थी। ॐ भिक्षु का स्मरण करते हुए अंतिम श्वास ली।

पारिवारिकजन बेटे प्रकाश देवेंद्र एवं सुभाष और बहू, बेटियों के अतिरिक्त पूरा फरीदाबाद तेरापंथ समाज का पूर्ण सहयोग रहा। प्रतिदिन नमस्कार महामंत्र के जप और भजन संध्या से घर का माहौल धर्म रूप था।

समणी मंजुप्रज्ञा जी एवं समणी स्वर्णप्रज्ञा जी ने उनकी अनशन की दृढ़ता को स्मृति सभा में प्रस्तुत किया। उनके पुत्र प्रकाश नौलखा, पुत्रवधू महिला मंडल की भूतपूर्व अध्यक्षा रज्जू, पौत्री अंकिता, पौत्रवधू शालिनी ने अपने श्रद्धासिक्त विचार रखे। समस्त पारिवारिकजनों की सामूहिक श्रद्धांजलि गीतिका के अतिरिक्त फरीदाबाद के सभा अध्यक्ष गुलाब, तेयुप अध्यक्ष विवेक, टीपीएफ अध्यक्ष विजय, महिला मंडल की बहनें और अणुव्रत समिति के अध्यक्ष ने भी विचाराभिव्यक्ति दी।

दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया तथा शाहदरा एवं मॉडल टाउन की भक्ति मंडली का पूर्ण सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन संजीव बैद ने किया।

✦ हमारी दुनिया में अज्ञान कष्ट है, अभिशाप है तथा ज्ञान वरदान है। अज्ञानी अपने हित और अहित का विवेक नहीं कर पाता।
—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

पुस्तकालय का उद्घाटन समारोह

नोएडा।

अभातेममं के निर्देशानुसार नोएडा, महिला मंडल द्वारा समृद्ध राष्ट्र योजना के 'Feed The Mind' परियोजना के अंतर्गत निठारी ग्राम के बीएम मेमोरियल पब्लिक स्कूल में पुस्तकालय का शुभारंभ किया गया। पुस्तकालय का उद्घाटन एसीपी रजनीश वर्मा, अभातेममं के महामंत्री मधु देरासरिया द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ किया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व राज्यमंत्री मदन चौहान, सद्भावना सेवा संस्थान के अध्यक्ष अनिल सिंह, एडवोकेट रणपाल अवाना, लायंस क्लब अध्यक्ष रचना यादव, उत्तर प्रदेश युवा व्यापार मंडल अध्यक्ष विकास जैन उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य शिल्पा बैद ने नमस्कार महामंत्र से किया। अध्यक्ष कविता लोढ़ा ने सभी का स्वागत करते हुए निर्मित पुस्तकालय के बारे में विस्तृत जानकारी दी एवं सभी अनुदानदाताओं का आभार व्यक्त किया। स्कूल प्रिंसिपल राजेश अंबावत ने बच्चों के भविष्य के लिए अति आवश्यक पुस्तकालय निर्माण के लिए प्रसन्नता व्यक्त की। अभातेममं महामंत्री मधु देरासरिया ने अभातेममं की ४ स्थायी योजनाओं के बारे में बताया। क्षेत्रीय प्रभारी मंजु भूतोड़िया, राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य शिल्पा बैद, सोनिका बैंगानी ने सभी का उत्साहवर्धन किया। महिला मंडल द्वारा गीतिका की प्रस्तुति दी।

पुस्तकालय निर्माण में कमरे का रंग-रोगन, टाइल्स, पंखे, लाइट, टेबल-कुर्सियों सहित नैतिक शिक्षा की कहानियों की किताबें, प्रेरक जीवनियाँ आदि लगभग ६०० किताबें रखवाई गईं। तेरापंथी सभा, नोएडा उपाध्यक्ष कंवरलाल सिपानी, मंत्री सुरेंद्र बैद, तेयुप अध्यक्ष दिलीप कुंडलिया, टीपीएफ अध्यक्ष प्रसन्न सुराणा, सतपाल जैन एवं महावीर लोढ़ा की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम संयोजिका सुमन सिपानी, श्वेता कुंडलिया एवं सोनिया जैन रही। कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर आरती कोचर एवं आभार ज्ञापन मंत्री दीपिका चोरड़िया ने किया। महिला मंडल के सभी पदाधिकारियों, सदस्यों, शिक्षकों, विद्यार्थियों सहित अच्छी संख्या में उपस्थिति से कार्यक्रम सफल बना।

सकारात्मकता की शक्ति कार्यशाला का आयोजन

साहूकारपेट, चेन्नई।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं, चेन्नई द्वारा रूपांतरण कार्यशाला 'द पॉवर ऑफ एफर्मेशन' का आयोजन तेरापंथ सभा भवन में किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र से हुआ। महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया।

उपाध्यक्ष गुणवंती खटेड़ ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। अध्यक्ष पुष्पा हिरण ने सभी का स्वागत करते हुए सकारात्मक सोच पर अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। सहमंत्री कंचन भंडारी ने नारी लोक का वाचन किया।

मुख्य वक्ता दीपाली सेठिया ने कार्यशाला के विषय पर प्रकाश डालते हुए सकारात्मक वाक्य नकारात्मक सोच पर काबू पाने वाला यह शब्द 'एफर्मेशन' पर अनेक उदाहरण एवं घटनाओं के माध्यम से वक्तव्य दिया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री रीमा सिंघवी ने किया।

केंद्र द्वारा निर्देशित कालू तत्त्व शतक, जैन तत्त्व विद्या पुस्तक पर आधारित बोर्ड गेम प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इस बोर्ड गेम में दो-दो की टीम बनाकर प्रतियोगियों को गेम के नियम अनुसार करवाया गया। सभी ने इस बोर्ड गेम को उत्साह के साथ खेलकर अपने ज्ञान की वृद्धि का माध्यम समझते हुए प्रतियोगिता की सराहना की। इस गेम में सर्वाधिक अंक पाकर विजेता पुरस्कार प्राप्त किया सुभद्रा लुणावत ने। बोर्ड गेम का संचालन अध्यक्ष पुष्पा हिरण एवं मंत्री रीमा सिंघवी ने किया। मुख्य वक्ता दीपाली सेठिया, बोर्ड गेम विजेता सुभद्रा लुणावत का महिला मंडल द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम में सभी पदाधिकारीगण एवं कार्यसमिति सदस्यों का सहयोग प्राप्त हुआ। धन्यवाद ज्ञापन सहमंत्री लता पारख ने किया।

परिवार को अहिंसा की प्रयोगशाला बनाएँ

राजमुंद्री।

बोथरा भवन में मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में 'अहिंसा Vs हिंसा' कार्यशाला का अभातेममं द्वारा निर्देशित स्थानीय तेममं द्वारा आयोजन किया गया।

मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि अहिंसा सुखी और सफल जीवन का प्राण तत्त्व है। आध्यात्मिक विकास के लिए अहिंसा का महत्त्व सर्वविदित है। उसके बिना स्वस्थ समाज का निर्माण संभव नहीं। व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में अहिंसा की व्यापक प्रतिष्ठा होना आज के संदर्भ में अत्यंत आवश्यक है। किसी प्राणी को शारीरिक कष्ट पहुँचाना हिंसा का स्थूल रूप है। इसे हर व्यक्ति सरलता से समझता है। किंतु मानसिक हिंसा अत्यंत सूक्ष्म है। जो शारीरिक हिंसा से भी अधिक जटिल और भयानक है। दोनों प्रकार की हिंसा के निवारण हेतु संयम प्रधान जीवनशैली का विकास आवश्यक है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने परिवार को अहिंसा की प्रयोगशाला बनाना चाहिए। सारा विश्व एक परिवार है। सबका अस्तित्व परस्पर संबद्ध है। परिवार में अहिंसा के विकास के लिए मैत्री का प्रयोग, सत्यं-सुंदरं, विधायक भाव के सूत्रों की चर्चा की।

कार्यक्रम में महिलाओं की अच्छी उपस्थिति रही। तेममं अध्यक्षा सुमन सुराणा ने मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

द पॉवर ऑफ एफर्मेशन कार्यशाला का आयोजन

हैदराबाद।

अभातेममं के निर्देशानुसार, हैदराबाद तेममं द्वारा 'द पॉवर ऑफ एफर्मेशन' कार्यशाला का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला आरंभ की गई। पच्चीस बोल दोहराए गए। तत्पश्चात बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया।

अध्यक्ष अनीता गिडिया ने सभी बहनों का स्वागत किया। बहन चित्रा दुगड़ ने बहा कि एफर्मेशन अर्थात एक ऐसा दृढ़ वाक्य जिसे हम बार-बार दोहराते हैं। हमारे अवचेतन मन में वह बात बैठ जाती है। हम यूनिवर्स से वैसे ही परमाणुओं को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

बबीता बैद ने बताया कि ऐसा माना जाता है जब हम बहुत जड़ शक्ति के साथ एफर्मेशन करते हैं मतलब रोज हम अपने आपसे ऐसा कहते हैं कि मैं बहुत अच्छा इंसान हूँ, मैं स्वस्थ हूँ, मैं ऊर्जावान हूँ, ईश्वर मेरे साथ है, मैं जीवन से संतुष्ट हूँ तो एक दिन जरूर हम वैसा ही बन जाते हैं। एफर्मेशन एक ऐसा शब्द है जिससे नकारात्मक सोच पर काबू पाया जा सकता है।

पूर्व अध्यक्ष रीता सुराणा ने अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने श्वास लेने के भी सही तरीके बताए। बहनों को ज्योति केंद्र प्रेक्षा का प्रयोग करवाया गया।

संयोजिका रीटा सुराणा, बबीबा संचेती, चित्रा दुगड़ का अच्छा सहयोग रहा। कार्यशाला में यशोदा कोठारी, बबीता संचेती, सुनीता बैद, राजकुमारी गिडिया, विनोद दुगड़ आदि बहनों की उपस्थिति रही।

वाशी।

अभातेममं निर्देशानुसार तेममं, मुंबई के तत्त्वावधान में वाशी की महिला मंडल द्वारा मुनिश्री के सान्निध्य में आयोजित कार्यशाला 'द पॉवर ऑफ एफर्मेशन' एवं 'द पॉवर ऑफ रिशोल्यूशन' का मुनि अभिजीत कुमार जी द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई।

मंगलाचरण महिला मंडल, वाशी द्वारा किया गया। संयोजिका इंदु बड़ाला ने स्वागत वक्तव्य और नारी लोक भरने की प्रेरणा दी।

मुनि अभिजीत कुमार जी ने रि-शोल्यूशन के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी और 'Navkar With Smile' के बारे में बताया। मुनि जागृत कुमार जी ने एफर्मेशन के बारे में बताया।

सह-संयोजिका, वाशी अनिता चपलोत, मुंबई चातुर्मास में भावना चौका के बारे में जानकारी दी और नववर्ष में वर्ष भर के लिए संकल्प के बारे में बताया। आगामी आने वाले कार्यक्रमों से अवगत कराया।

महाराष्ट्र प्रभारी निर्मला चंडालिया की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन बबीता बाफना ने किया। कार्यक्रम का संचालन पूजा गादिया ने किया।

साध्वी स्थितप्रभा जी की स्मृति सभा

जयपुर।

तेरापंथी सभा, जयपुर व भिक्षु साधना केंद्र समिति के तत्त्वावधान में शासन गौरव साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य में साध्वी स्थितप्रभा जी की स्मृति में गुणानुवाद सभा आयोजित हुई। सर्वप्रथम उनके परिवार की तरफ से बबीता घीया, प्रज्ञा घीया, बबीता डोसी ने गीत के द्वारा दिव्यात्मा को श्रद्धा समर्पित की। हैदराबाद सभा अध्यक्ष बाबूलाल बैद ने कहा कि हमें गौरव है, हमारी निकट परिवार की सदस्या समणीजी पर, जिनकी सेवा-उपासना का सौभाग्य हमें मिला। उसके प्रतिदान में समणीजी द्वारा हमें जीवन दृष्टि मिली। हमारी धार्मिक रुचि और संघ-संघपति के प्रति आस्था का भाव दृढ़ हुआ। मनीषा घीया ने पूज्यप्रवर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए संदेशों का वाचन किया।

डॉ० सुशीला बाफना ने कहा कि समणीजी का जीव एक दृष्टि से यूनिक था। वे सौभाग्यशाली थी। गुरुकृपा से अंतिम समय में शासन गौरव साध्वी की सन्निधि में समाधिपूर्वक साधना-आराधना करती हुई अंत में संयम जीव और अनशनपूर्वक देह त्याग दिया।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष हिम्मत डोसी, मंत्री सुरेंद्र बैंगाणी, नोरतनमल नखत (अध्यक्ष भिक्षु साधना केंद्र समिति), पुष्पा बैद (पूर्व अध्यक्ष अभातेममं), नीरू पुगलिया (तेममं, सी-स्कीम) आदि ने भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित की।

शासन गौरव साध्वी कनकश्री जी ने समणी स्थितप्रज्ञा जी से साध्वी स्थितप्रभा तक की यात्रा की उपलब्धि दो वाक्यों में बताई कि उन्होंने आत्मनिष्ठा, गुरुनिष्ठा और नियम निष्ठा से गुरुवरत्रयी की कृपा और विश्वास प्राप्त किया।

समणी डॉ० कुसुमप्रज्ञा जी ने सहदीक्षित समणी स्थितप्रज्ञा जी की विरल विशिष्टताओं का उल्लेख करते हुए कहा कि कठोर श्रम करने वाली, दृढ़-संकल्पी, सहयोगी स्वभाव वाली थी। समणी नियोजिका अमलप्रज्ञा जी ने कहा कि जितनी ऊर्जा संपन्न थी, उतनी ही विनम्र थी। साध्वी पुण्यप्रभा जी ने उनकी भावी यात्रा मंगलकामना हो, उनका भविष्य उज्ज्वलतम हो यह भावना व्यक्त की।

साध्वी मधुलता जी ने कहा कि हमने देखा साध्वीश्री जी के सान्निध्य में वे २० दिन रही। वे प्रायः प्रसन्नता और स्वस्थता का अनुभव करती थी। साध्वियों ने व समणीवृंद ने भी गीतों का संगान कर अपनी भावांजलि समर्पित की। समणी मुदुप्रज्ञा जी ने कहा कि गुरुकृपा से मुझे इस अवसर पर समणी स्थितप्रज्ञा जी की सेवा में रहने का अवसर मिलने से सुखद क्षण चिरस्मरणीय रहेंगे, अंत में चार लोगस्स का सामूहिक ध्यान कर मध्यस्थ भावना का प्रयोग किया गया। संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन सुशीला नखत ने किया।

संथारा समाचार

विजयनगर।

परमपूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमण जी के आदेशानुसार साध्वी गवेषणाश्री जी एवं साध्वी मयंकप्रभा जी ने चुरू निवासी, बैंगलोर प्रवासी स्व० बछराज कोठारी के सुपुत्र ८० वर्षीय श्रावक रतनलाल कोठारी को चौविहार संथारा का प्रत्याख्यान पूरे परिवार एवं समाज की साक्षी में करवाया। ज्ञातव्य है कि रतनलाल ने २७ दिसंबर से चौविहार संलेखना शुरू की थी।

इस अवसर पर तेयुप, विजयनगर से अध्यक्ष श्रेयांस गोलछा, सहमंत्री संजय भटेवरा, उत्तम बागरेचा एवं राजाजीनगर, तेयुप से संजीव गन्ना एवं पंकज बोहरा तथा श्रावक समाज की उपस्थिति रही।

भक्ति भजन संध्या का आयोजन

नई दिल्ली, महरौली।
नव वर्ष-२०२३ की पूर्व संध्या पर जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, दिल्ली अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास एवं तेरापंथी सभा, दक्षिण दिल्ली के संयुक्त आयोजकत्व में भक्ति भजन संध्या का आयोजन अध्यात्म साधना केंद्र, छतरपुर स्थित भिक्षु सभागार में मुनि जयकुमार जी एवं मुनि मुदित कुमार जी के सान्निध्य में किया गया।

मुनिश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। सुप्रसिद्ध गजल गायककार जितेंद्र सिंह जम्वाल ने अपनी सुमधुर प्रस्तुतियों से ऑडिटोरियम का वातावरण अध्यात्ममय बना दिया। आपने तेरापंथ धर्मसंघ के प्रथमाचार्य आचार्य भिक्षु को समर्पित गीतों एवं अन्य अध्यात्ममय प्रस्तुतियों से उपस्थित जनमेदिनी को संगीत की स्वर लहरियों से भक्ति में सराबोर कर दिया।

तेरापंथ समाज, दिल्ली के सुमधुर गायक मनोज नाहर, जयसिंह दुगड़, ललित श्यामसुखा, सुयश बैंगाणी, राहुल बैद एवं चारू बांठिया ने अपनी-अपनी प्रस्तुति दी। मुनि मुदित कुमार जी ने गीत का संगान किया। मुनि जयकुमार जी ने अपने आराध्य को समर्पित काव्य पाठ किया।

इस आयोजन में सभा के सांस्कृतिक प्रभारी जयसिंह दुगड़ व ललित श्यामसुखा का श्रम रहा। तेरापंथ भवन निदेशक सुशील कुहाड़ एवं भवन व्यवस्थापक संदीप डूंगरवाल का विशेष श्रम कार्यक्रम की सफलता का आधार रहा।

कार्यक्रम रूपरेखा निर्धारण एवं आयोजन में कार्यक्रम संयोजकद्वय राजेश भंडारी, इंद्र बैंगाणी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। भक्ति संध्या में श्रावक समाज की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन राजेश भंडारी एवं संयोजन सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने किया।

नव वर्ष २०२३ के मंगल प्रभात की स्वर्णिम बेला में अध्यात्म साधना केंद्र स्थित वर्धमान सभागार में मुनिश्री के सान्निध्य में वृहद् मंगलपाठ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुनि जयकुमार जी ने भक्तामर एवं विविध आगमिक मंगल मंत्रों का समवेत स्वर में मंगल उच्चारण किया तथा नव वर्ष के आगम पर प्रेरणा पाथेय प्रदान करवाया।

दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने नव वर्ष पर मंगलकामनाएँ व्यक्त करते हुए मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता एवं श्रावक समाज के प्रति आभार व्यक्त किया।

'कैसी हो हमारी वाणी' कार्यशाला का आयोजन

राजमुंद्री।
बोथरा हाउस में मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में 'कैसी हो हमारी वाणी' कार्यशाला का आयोजन तेरापंथी सभा, राजमुंद्री द्वारा किया गया।

मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि जीवन को कलापूर्ण बनाने के लिए बोलने की कला का विकास करना जरूरी है। वाणी का सदुपयोग भी किया जा सकता है, दुरुपयोग भी। इससे समस्या भी पैदा की जा सकती है, समाधान भी किया जा सकता है। भाषा व्यक्तित्व का आइना है। वाणी से पता चल जाता है कि व्यक्ति कैसा है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि हमारी वाणी इष्ट, मिष्ट, शिष्ट हो तो व्यक्ति विशिष्ट बनता है। मितभाषी बनें, मधुरभाषी बनें, सत्यभाषी बनें और समीक्ष्यभाषी बनें। वाणी को बाण नहीं, वीणा बनाएँ।

मुनि काव्य कुमार जी ने कहा कि पारिवारिक जीवन में संबंधों की मधुरता के लिए वाणी संयम बहुत जरूरी है। वाणी संयम होगी तो परिवार स्वर्ग के समान बनेगा, नहीं तो नरक तुल्य बन जाएगा।

स्थानीय सभाओं की सार-संभाल

जालना।
श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के उपाध्यक्ष अशोक तातेड़ और कार्यकारिणी सदस्य निर्मल जैन, डॉ० अनिल नाहर एवं स्थानीय सभा प्रभारी अनिल सांखला पधारे। उन्होंने स्थानीय तेरापंथ सभा की गतिविधियों के बारे में जानकारी ली और महासभा की गतिविधियों एवं आयामों के बारे में जानकारी दी।

जालना सभा के मंत्री अनिल संचेती ने सभी का स्वागत एवं आभार व्यक्त किया। तेरापंथ सभा, तेयुप एवं तेमम, जालना के सदस्य भी उपस्थित रहे।

✦ *ज्ञान प्राप्ति के लिए बहुश्रुत की उपासना करनी चाहिए और विवेकशील व्यक्तियों से मार्गदर्शन लेना चाहिए।*
– आचार्यश्री महाश्रमण

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

✻ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✻ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✻ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✻ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✻ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✻ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✻ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✻ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✻ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✻ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
✻ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
✻ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
✻ श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

चेन्नई।
शकुंतला-कन्हैयालाल मेहता राणावास निवासी, एम०के०बी० नगर, चेन्नई प्रवासी का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक पदमचंद आंचलिया, स्वरूपचंद दांती, हनुमान सुखलेचा ने मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपादित करवाया।

परिजनों की ओर से लालचंद मेहता, तेयुप कार्यसमिति सदस्य निरंजन सियाल ने संस्कारकों, तेयुप टीम को साधुवाद दिया। इस अवसर पर आकाश मेहता, बादल मेहता के साथ अनेकों परिजन, विशिष्ट अतिथि उपस्थित थे।

सूरत।
सायरा निवासी, सूरत प्रवासी नरेंद्र जैन के सुपुत्र आकाश जैन का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक मीठालाल भोगर, कांतिभाई मेहता, बजरंग बैद ने संपूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में उपासक प्रकाश सिंघवी की उपस्थिति रही।

नरेंद्र व उनके सभी परिजनों ने सभी के प्रति आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत की ओर से मंगलभावना पत्रक व मंगलकामना पत्र भेंट किया गया।

पाणिग्रहण संस्कार

पूर्वांचल कोलकाता।
बीदासर निवासी कंटाई (बंगाल) प्रवासी उम्मेद कुमार बांठिया के सुपुत्र अमित कुमार बांठिया का शुभ पाणिग्रहण संस्कार लुधियाना निवासी हरदीप सिंह ग्रेवाल की सुपुत्री गुरिंदर कौर ग्रेवाल के संग जैन संस्कार विधि से संस्कारक पुष्पराज सुराणा व सह-संस्कारक सुमेरमल बैद द्वारा संपन्न करवाया गया।

उम्मेद कुमार बांठिया ने परिषद व संस्कारकों के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में उपस्थित तेयुप पूर्वांचल के मंत्री हेमंत बैद और सदस्य हितेंद्र बांठिया ने मोमेंटो प्रदान कर नव विवाहित जोड़े को शुभकामनाएँ प्रेषित की।

श्रीडूंगरगढ़।
अशोक लुनिया सुपुत्र नेमचंद लुनिया का शुभ विवाह संस्कार रिंकू सुपुत्री बिजया सिंह लोढ़ा के साथ संस्कारक प्रदीप पुगलिया एवं चमन श्रीमाल, सहयोगी संस्कारक तेयुप मंत्री दीपक सेठिया ने संपूर्ण विधि-विधान व मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

तेयुप मंत्री दीपक सेठिया ने दोनों परिवारों को आभार ज्ञापित करते हुए वर-वधू के वैवाहिक जीवन की मंगलकामना की।

नूतन शिलान्यास

गंगाशहर।
मोनिका चोपड़ा धर्मपत्नी स्व० सोहनलाल चोपड़ा के नूतन गृह हेतु भूमि के शिलान्यास का मंगल शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक पवन छाजेड़, पीयूष लुणिया और देवेंद्र डागा ने विधि-विधानपूर्वक मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

इस अवसर पर परिवार के सदस्य और समाज के गणमान्य लोगों की उपस्थिति रही।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

सूरत।
ऊमरी (भीलवाड़ा) निवासी, सूरत प्रवासी महिंद्रा कुमार नंगावत के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक कांति भाई मेहता, मीठालाल भोगर ने संपूर्ण मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

परिवार से अशोक नंगावत ने सभी का अज्ञार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत की ओर से दोनों संस्कारों ने नंगावत परिवार के प्रति आभार व्यक्त किया एवं मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

नामकरण संस्कार

रायपुर।
पड़िहारा निवासी, रायपुर प्रवासी मोनिश-रूपल डागा के पुत्र रत्न प्राप्ति पर नामकरण जैन संस्कार विधि से संस्कारक अनिल दुगड़, सूर्यप्रकाश बैद, अर्पित गोखरू ने संपूर्ण विधिवत् मंत्रोच्चार के द्वारा संपन्न करवाया।

तेयुप, रायपुर अध्यक्ष मनीष दुगड़ ने डागा परिवार के प्रति आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में पारिवारिक जन एवं अन्य गणमान्यजन उपस्थित थे।

साध्वी स्थितप्रभा जी के प्रति आध्यात्मिक उद्गार

अर्हम्

● समणी नियोजिका अमलप्रज्ञा ●

जन्म और मृत्यु जीवन के दो किनारे हैं, जिन पर व्यक्ति का अधिकार नहीं होता कि उसे कब, कहाँ, कैसे जन्म लेना है या मृत्यु को प्राप्त करना है, पर जन्म और मृत्यु के बीच जो जीवन है, उसे किस प्रकार जीना है उसमें व्यक्ति स्वतंत्र होता है।

समणी स्थितप्रज्ञा जी के पूरे जीवन को जब मैं देखती हूँ तो लगता है, उन्होंने हर क्षेत्र में अनेक उपलब्धियों को हासिल किया। पंचाचार की साधना में वे विशेष सजग थे। ज्ञानाचार की दृष्टि से देखें तो उन्होंने चार विषयों में एम०ए० की डिग्री हासिल की, नेट, पीएच०डी किया। वर्षों तक जैन विश्व भारती संस्थान में अध्यापन करवाया, विभागाध्यक्ष रहीं, अनेक शोधार्थियों का मार्गदर्शन किया, शोध आलेख लिखे, प्रेक्षाध्यान पत्रिका का संपादन आदि अनेक कार्य किए।

दर्शनाचार की दृष्टि से देखें तो जिनवाणी, देव-गुरु, धर्म पर आपकी गहरी आस्था थी। यात्रा के दौरान एक-एक श्रावक-श्राविकाओं की सार-संभाल करना, उन्हें सही दिशा देना, उनकी सोच को सकारात्मक और भव्यी जीवों को कर्मणा जैन बनाना उनके सम्यक् दर्शन की पुष्टि का परिचायक है।

गृहस्थ से मुमुक्षु, मुमुक्षु से समणी और समणी से साध्वी तक की यात्रा आपके सम्यक् चारित्र की आराधना है।

तप, साधना के प्रति भी आपकी गहरी रुचि थीं आपने अपनी इस संयम यात्रा में साधना के अनेक प्रयोग किए, जिसमें मोई प्रतिमा का प्रयोग एक विलक्षण प्रयोग था।

हमने आपको सतत् पुरुषार्थ करते देखा। आपने अपने वीर्य का कभी गोपन नहीं किया। सेवा-सहयोग में आपके हाथ सतत् तत्पर रहते।

'धुणइ कम्मरयं' इस आगम सूक्ति की उत्कृष्ट आराधना कर समणी स्थितप्रज्ञा जी ने अपने तीनों मनोरथ पूर्ण किए। गुरुदेव ने बड़ी कृपा करवाकर शासन गौरव साध्वी कनकश्री जी के हाथों उनका श्रेणी आरोहण करवाया। चौविहार संथारे का प्रत्याख्यान करवाया। अंतिम समय में भी संयम की उत्कृष्ट भावना और वंदना में समभाव की साधना हम सबके लिए प्रेरणा है। उस दिव्यात्मा को संपूर्ण समण श्रेणी की ओर से शत-शत श्रद्धांजलि और उनके आध्यात्मिक विकास की मंगलकामना---।

आज्ञा आराधक - स्थितप्रज्ञा

● समणी सुमनप्रज्ञा ●

प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व अनेक रूपों से जाना जाता है। किसी की पहचान रूप से, किसी की धन से, किसी की प्रतिभा व डिग्री से। प्रत्येक व्यक्ति की पहचान अलग-अलग होती है। ये सब लौकिक पहचान है। लोकोत्तर पहचान के रूप अलग-अलग हैं, लोकोत्तर पहचान गुणों से होती है।"

समणी स्थितप्रज्ञा जी, जिन्हें हम बड़े बावजी के रूप में बुलाते थे। आपका हँसता चेहरा जीवनरूपी बाध्य पैकिंग के समान था, आपका हृदय शोरूम के साइन बोर्ड सदृश था। आपकी अंतरंग आत्मा, तप, संयम, स्वाध्याय, अनुप्रेक्षा, सकारात्मक सोच के आनंद से आनंदित था तथा Self-dependent थे।

आचार-विचार से आकर्षक व प्रभावक व्यक्तित्व से आपने हमेशा प्रभावित किया। आप वाणी से समृद्ध थी। बड़ों को सम्मान देते व छोटो को 'आप' से ही संबोधित करके बुलाती थी, आपका जीवन हम सबके लिए अनुकरणीय है।

ऐसा प्रभावशाली, वर्चस्वी, व्यक्तित्व समण श्रेणी से विलीन हो गया। आपकी आत्मा उत्तरोत्तर विकास करती हुई मोक्ष को प्राप्त करे।

आचार में स्थित, विचार में स्थित, व्यवहार में स्थित, स्थितप्रज्ञा समण श्रेणी में जीवन कुर्बान, आन-बान-शान–स्थितप्रज्ञा विनतभाव से श्रद्धा वंदन स्मरण करे अधः हम सब, स्मृतियों में अंकित तब जीवन, गुरु आज्ञा धारक-स्थितप्रज्ञा।

बढ़ाऍं बड़ों का सम्मान

● समणी जगतप्रज्ञा ●

आदरणीया समणी स्थितप्रज्ञा जी, जिन्हें समण श्रेणी की प्रथम समणी बनने का गौरव प्राप्त हुआ। कई विशेषताओं का समवाय था आपका जीवन। अप्रमत्त जीवनशैली, स्वाध्यायशीला, स्वावलंबी व दृढ़-मनोबल की धनी थी डॉ० समणी स्थितप्रज्ञा जी। मुझे यद्यपि आपके साथ लंबी यात्रा करने का सौभाग्य तो प्राप्त नहीं हुआ, पर मेरी प्रथम पर्युषण यात्रा आपके साथ हुई। उस समय एक माह आपके साथ रहने का अवसर प्राप्त हुआ। उस समय मैं नवदीक्षित थी, बहुत कुछ आपसे सीखा; एक प्रसंग मुझे याद आ रहा है–

पर्युषण यात्रा के दौरान सिल्चर (आसाम) जाना हुआ। आपके साथ हम तीन समणी थे–समणी प्रसन्नप्रज्ञा जी, मैं तथा गुप्तिप्रज्ञा जी। वहाँ गोचरी के घरों की लिस्ट बनी हुई थी। वो लिस्ट आपके पास थी। आपकी तबियत ठीक नहीं होने से आप विश्राम कर रही थी। एक भाई लिस्ट माँगने आया। मैंने समणी प्रसन्नप्रज्ञा जी से पूछकर लिस्ट उस भाई को दे दी। शाम के समय आपने उस लिस्ट के लिए पूछा तो मैंने कहा–वो तो मैंने एक भाई को दे दी। यह सुन स्थितप्रज्ञा जी ने मुझसे कहा–आपने मेरे से बिना पूछे कैसे दे दी? मैंने कहा–आप पोढ़ाए हुए थे तो मैंने समणी प्रसन्नप्रज्ञा जी से पूछकर दे दी तो कहा–क्या आपके आगीवान समणी प्रसन्नप्रज्ञा जी हैं? मैंने कहा–नहीं, मेरे आगीवान तो आप ही हैं। मेरे से भूल हो गई। आगे से मैं ध्यान रखूँगी। आप मेरे से नाराज हो गयी। मैंने अनुनय-विनय किया तथा गलती स्वीकार की, तब आपने स्नेह की वर्षा करते हुए कहा–आप इतने समझदार हो फिर ऐसी गलती कैसे की। आगे से ध्यान रखना। आपने बड़े प्रेम से मुझे समझाया। तब से मुझे एक सीख मिल गई कि काम चाहे छोटा ही क्यों न हो पर बड़ों से पूछकर ही करना चाहिए।

आपको बाँट-बाँटकर खाना बहुत अच्छा लगता था। गौतम ज्ञानशाला में जब भी आपके कोई न्यातीले या परिचित आते और कोई द्रव्य आता तो आप शारीरिक साता न होते हुए भी एक-एक कमरे में जाकर, एक-एक को याद रखकर सभी को द्रव्य बाँटते। बड़ी उदारता थी आपके जीवन में। आपने तीनों मनोरथ पूर्ण कर साध्वी स्थितप्रभा के रूप में अंतिम साँस ली और सदा-सदा के लिए विदा हो गई। मैं आपके आध्यात्मिक उत्थान की मंगलकामना करती हुई। आप द्वारा प्रदत्त संस्कारों को जीवित रख सकूँ, ऐसी कामना करती हूँ।

अर्हम्

● समणी मधुरप्रज्ञा ●

समणी स्थितप्रज्ञा जी को समण श्रेणी की प्रथम समणी बनने का गौरव प्राप्त हुआ। आपका समण श्रेणी का बयालीस वर्ष का कालमान विविधताओं को लिए हुए था। कई क्षेत्रों में कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ। जैन विश्व भारती विश्व विद्यालय-तुलसी अध्यात्म नीडम् आदि।

आप बचपन से ही धुन के धनी थे। जिस काम को हाथ में लेते, लगन के साथ पूरा करके विश्राम लेते। आपका स्वावलंबन, सरलता, कृतज्ञता, आज्ञानिष्ठा व बड़ों के प्रति आदर भाव आदि गुण न केवल प्रशंसनीय हैं बल्कि अनुकरणीय भी है। आपकी स्वाध्यायप्रियता और मंत्र साधना भी विशिष्ट थी।

आप मनोबल के धनी थे। कैसी भी परिस्थिति आई किंतु आपने मनोबल और धृतिबल के साथ हर घटना को सहज बनाने का प्रयत्न किया।

आपका जीवन प्रयोगधर्मी रहा है। बहुत बार शारीरिक अस्वस्थता में भी दवाई न लेकर विभिन्न प्रयोगों से अपना उपचार कर लेती।

समण श्रेणी के सहवास के साथ आपसे स्नेह पाया तो आप सम्मान भी बहुत देती थी। साथ जीए पल आज तो मात्र स्मृतियाँ बनकर रह गए हैं। आपसे जो अपनापन मिला उसके प्रति अहोभाव।

ऋजुभूत आत्मा साध्वीश्री स्थितप्रभाजी

● समणी जयंतप्रज्ञा ●

आदरणीया समणी स्थितप्रज्ञा जी समण श्रेणी में नींव का पत्थर थी। तेरापंथ के इतिहास में साध्वी स्थितप्रभा जी के रूप में अंकित हो गईं। उनका जीवन आगम सूक्त 'सो ही उज्जुयभूयस्स'–धर्म ऋजुभूत के अंतःकरण में रहता है–को चरितार्थ करने वाला था। उनको आदर देने वालों और अनुकूल रहने वालों को उनकी छप्पर फाड़ कृपा मिलती थी। जो व्यक्ति उनके प्रतिकूल वर्तन करना उसको वे सीधी-सपाट भाषा में कहने का भी संकोच नहीं किया करती थी। उनका जीवन खुली किताब की तरह था। अंदर-बाहर एक जैसा। कूटनीति वे नहीं जानती थी।

गणाधिपति तुलसी के समय मुझे उनके साथ गोहाटी सेंटर की यात्रा का अवसर प्राप्त हुआ। मैं तो उनसे काफी छोटी थी, वर्ग में भी तीसरे नंबर पर थी, पर मुझे उनका खूब अनुग्रह मिला। ये मेरा सौभाग्य रहा कि उनको मेरा काम और मेरी मनुहार दोनों पसंद आ गईं। इस छोटी-सी सेवा के बदले मुझे उनसे दो अनमोल चीजें प्राप्त हुईं–प्रेरणा और प्रोत्साहन। वे मुझे शीत बनाने के लिए अवसर देते। उस यात्रा के दौरान मैंने कई गीतों की रचना की। बड़े-बड़े कार्यक्रमों में भाषण देने के अवसर दिया करते थे। अंग्रेजी पढ़ने के लिए न केवल प्रोत्साहित करते वरन् अंग्रेजी जानने वाली कन्याओं की व्यवस्था के साथ-साथ समय भी दे दिया करती थी। उस यात्रा के दौरान मुझे विकास करने का अच्छा अवसर मिला।

मैं देखती थी वे अच्छी अध्ययनशील थीं। ज्ञान भी अच्छा था लेकिन 'मैं-मैं' का अहंकार नहीं था। भाषा और व्यवहार में कभी भी बड़प्पन की बू नहीं आती थी। जीवन के अनेक उतार-चढ़ावों में कभी वे हारी नहीं। और जीवन का अंत तो गुरुकृपा से 'चट मंगनी पट शादी' जैसा हो गया। बीमारी, दीक्षा और संथारा–सारा दो दिन का खेल---बस। साध्वी स्थितप्रभा जी की आत्मा उत्तरोत्तर मोक्ष की तरफ बढ़े। यही मंगलकामना।

अर्हम्

● समणी निर्मलप्रज्ञा ●

'आणाए भामगं धम्मं' इस आगम सूत्र को आत्मसात् करने वाली समणी स्थितप्रज्ञा जी गुरुदेव के आशीर्वाद से शीघ्र ही साध्वी स्थितप्रभा जी बन गई।

मेरी समणी दीक्षा १९८४ में हुई। आदरणीया समणी स्थितप्रज्ञा जी के साथ मुझे छोटी-छोटी ५ यात्रा करने का अवसर मिला। मैंने देखा कठोर अनुशासन के साथ उनके जीवन में कोमलता का संगम था। मैं जब नवदीक्षित थी तब अनेक बार आपका संरक्षण मुझे मिलता रहता था। मेरी परीक्षा के साथ आप तत्पर रहती थी। अन्य समणियाँ जब गोष्ठी आदि के लिए अन्यत्र प्रस्थान करती तब मुझे आपके पास रखा जाता था। आप ध्यान रखवाते थे।

किसी कार्य में कोई भूल हो जाती तब आप तेज स्वर में डाँट लगाती, किंतु पुनः वात्सल्य देकर संतुलन का दृश्य दिखाती थी। गुरुदेव की कृपा से मुझे लंबे समय से गुरुकुल की उपासना का अवसर मिलता ही रहा है। आप अपने पास बुलाकर मेरे माध्यम से गुरु सेवा सुनती एवं कहती थीं मैं गुरु सेवा सुनकर यहाँ बैठकर निर्जरा कर रही हूँ।

१९९३ में मेरी जन्मभूमि (बाव-गुजरात) में आपके साथ यात्रा की थी। उस समय यात्रा में अधिक समय रह गए। गुरुदेव का निर्देश नहीं था–थोड़ी-सी भूल रह गई। गुरुदेवश्री तुलसी से थोड़ा उपालंभ भी मिला। समणी स्थितप्रज्ञा जी ने उस अनुशासन को धैर्य से सहन किया।

समणी स्थितप्रज्ञा जी के साथ मुझे जैन दर्शन में एम०ए० करने का अवसर मिला। आपने मुझे अध्यापन भी करवाया। मैं आपके कृत उपकारों के प्रति नतमस्तक हूँ। आपके शुभ भविष्य की मंगलकामना करती हूँ।

साध्वी स्थितप्रभा जी के प्रति आध्यात्मिक उद्‌गार

श्रद्धांजलि

● समणी चैतन्यप्रज्ञा, समणी हिमप्रज्ञा (मायामी, अमेरिका) ●

आदरणीय नियोजिका जी एवं अन्य माध्यमों से ज्ञात हुआ है कि समण श्रेणी की प्रथम समणी श्री स्थितप्रज्ञाजी का आकस्मिक रूप से देवलोक गमन हो गया। समण श्रेणी की प्रथम दीक्षित समणी का नाम स्थितप्रज्ञा रखने के पीछे परमपूज्य गणाधिपति आचार्यश्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का चिंतन संभवतः यह रहा होगा कि उनके नाम के साथ यह श्रेणी स्थिर बने। समणी श्री स्थितप्रज्ञाजी ने अपने नाम को सार्थक कर पूज्यवरों की उस परिकल्पना को सत्यापित किया।

सर्वज्येष्ठा समणी श्री स्थितप्रज्ञा जी का जीवन आत्मनिष्ठा, गुरुनिष्ठा, आज्ञानिष्ठा और मर्यादानिष्ठा का अनूठा उदाहरण था। व्यवस्था और व्यवस्थापक के प्रति गहरा सम्मान हम सभी अवम रात्निक समणीजी के लिए जीवंत प्रेरणा थी।

उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई थी। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की प्रथम एम०ए०, नेट, पीएच०डी० एवं विभागाध्यक्षा बनने का गौरव प्राप्त किया था। जीवन विज्ञान की विभागाध्यक्षा बनकर उसका मार्गदर्शन ही नहीं किया अपितु उसे गति प्रदान की और उच्च शिक्षा और शोध के क्षेत्र में प्रतिष्ठित किया।

वे ध्यान और मंत्रों की विशिष्ट साधिका थी तथा अनेक विषयों पर अधिकार रखती थी। उन्होंने शोध और संपादन के क्षेत्र में भी अनेक कार्य किए। आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य और प्रेक्षा साहित्य के संपादन में उनका विशिष्ट योगदान रहा है। प्रेक्षा पत्रिका का अनेक वर्षों तक संपादन कर उसे प्रतिष्ठित करने में भी उनका विशिष्ट योगदान रहा है।

सम्यग् दर्शन, ज्ञान और आचार के क्षेत्र में विशिष्टता प्राप्त रत्नाधिक समणी श्री स्थितप्रज्ञा जी का आकस्मिक देवलोकगमन निश्चित ही हम सबके लिए चौंकाने वाली घटना है। परमपूज्य आचार्यवर की अनुज्ञा से वंदनीया बहुश्रुत साध्वी कनकश्रीजी महासतियाँ जी के उपपात में रहकर तथा संथारापूर्वक श्रेणी आरोहण कर उन्होंने अपने जन्म, जीवन और मृत्यु को सार्थक ही नहीं सफल बनाया है।

पूज्यवर की अनुकंपा से रत्नाधिक समणी श्री स्थितप्रज्ञा जी की पवित्र आत्मा निरंतर उत्तरोत्तर आध्यात्मिक उन्नयन करते हुए शीघ्र मोक्ष प्राप्त करे। दिवंगत आत्मा के प्रति हम भावपूर्ण श्रद्धांजलि व्यक्त करते हैं।

विनम्र श्रद्धांजलि

● समणी कमलप्रज्ञा ●

स्थितप्रज्ञा विलक्षण दीक्षा की एक दिव्य
नजीर बनकर आई,
समण श्रेणी में गरिमामय उपस्थिति की
अनुपम तस्वीर कहलाई,
अग्रिम पंक्ति के आदर्शमय शीर्ष स्थान पर
स्थित होकर,
ध्यान, योग, स्वाध्याय-लयता की
सुंदरतम तस्वीर बन वाई---।।

संघ-निष्ठा, गुरु-निष्ठा, आचार-निष्ठा, आगम-निष्ठा, स्वाध्याय-निष्ठा, श्रम-निष्ठा, नीति-निष्ठा, नियम-निष्ठा—इन निष्ठा अष्टकम् की अद्भुत प्रेरक, अप्रतिम आत्मा को विनम्र श्रद्धांजलि तथा शुभकामना कि उनकी आत्मा का निरंतर ऊर्ध्वारोहण होता रहे तथा शीघ्रातिशीघ्र मोक्ष को प्राप्त करें।

सेवा की पर्याय समणी स्थितप्रज्ञा जी

● समणी प्रतिभाप्रज्ञा ●

सेवाभाव संघ की नींवों को गहराता है, आध्यात्मिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त करता है। समणी स्थितप्रज्ञा जी का जीवन सेवा का जीता-जागता उदाहरण है। बात उस समय की है जब १९८८ में मेरी दीक्षा हुई। कुछ समय पश्चात मुझे तीन बार टाइफाइड हुआ। मैं शारीरिक तथा मानसिक रूप से काफी कमजोर हो गई। मुझे इंजेक्शन से बहुत डर लगता था। समणी स्थितप्रज्ञा जी मेरी चित्त समाधि थी। मैंने उन्हें बताया कि आप चार समणी जी को बुलाकर लाएँ, वे मुझे पकड़ेंगे तो ही मैं इंजेक्शन लगवाऊँगी।

उन्होंने कहा कि चार की कोई जरूरत नहीं, मैं ही पकड़ लूँगी, आप निश्चिंत हो इंजेक्शन लगा लो। उन्होंने मुझे पकड़ा, नर्स ने इंजेक्शन तैयार किया, जैसे ही लगाने लगी मैं बहुत तेजी से उछल गई। वह इंजेक्शन मेरे लगने की बजाय उनके हाथ में लग गया। अचानक ऐसा होने से उनके हाथ से खून निकलने लगा। नर्स ने कहा—यह इंजेक्शन बेकार हो गया। भय के मारे मेरी हालत देखने जैसी थी। पर समणी स्थितप्रज्ञा जी ने मुझे कुछ भी नहीं कहा। दिन थोड़ा ही था वे तुरंत किसी समणी जी को साथ लेकर दूसरा इंजेक्शन लेकर आए।

मुझे संबोध देते हुए कहा कि घबराओ नहीं। मैं आपको 'आत्मा भिन्न शरीर भिन्न' की अनुप्रेक्षा करवाती हूँ। अब मैं आपको पकड़ूँगी नहीं; आप स्वयं रिलेक्स होकर इंजेक्शन लगवाएँ।

उस अस्वस्थता में बहुत इंजेक्शन लगे। अब मुझे किसी के सहारे की अपेक्षा नहीं थी लगभग महीने-भर वे मुझे निरंतर कायोत्सर्ग तथा अनुप्रेक्षा के प्रयोग करवाती रही।

उनका वात्सल्य आज भी मेरी स्मृति में सहेजा हुआ मोती है। दीक्षा के बाद मेरे पात्र का रंग-रोगन वे निरंतर करती रही। अब तक लगभग ३४ वर्षों में मैंने कभी भी पात्र निर्माण का कार्य स्वयं नहीं किया। उनके सान्निध्य में उन्होंने अनेक बार जप, तप, एकांतवास व मौन प्रयोग मुझे करवाए जो मेरे जीवन की धरोहर बन गए हैं।

सेवा सजे हाथ

● समणी कांतिप्रज्ञा ●

सन् १९८९ में मेरी समण दीक्षा हुई। एक माह के पश्चात् अचानक मैं अस्वस्थ हो गई। मुझे अस्पताल में भर्ती करवाया गया। परिचर्या हेतु गुरुदेव तुलसी ने समणी स्थितप्रज्ञा जी आदि तीन समणी जी को नियुक्त किया। मेरे अपेन्डिक्स का ऑपरेशन हुआ। एक दिन अचानक मेरा जी घबराने लगा, मैंने इशारा किया कि मुझे उल्टी होगी। दोनों समणीजी समाधि-पात्र को खोजने लगे। मैं उल्टी के वेग को रोक नहीं सकी।

समणी स्थितप्रज्ञा जी ने दोनों हाथ मेरे सामने कर दिए। मुझे उल्टी हो गई। मैंने देखा उनकी पूरी अंजली उल्टी से भर गई, मेरी आँखों में पानी आ गया। समणी स्थितप्रज्ञा जी ने वात्सल्य से मेरी ओर देखा और कहा घबराओ नहीं। ये हाथ धोने से साफ हो जाएँगे। आप बिलकुल भी चिंता नहीं करो।

सेवा से सजे वे हाथ समण श्रेणी की ख्यात बन चुके हैं। आने वाले समय में शैक्ष सेवा के संदर्भ में हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे।

एक दूसरा प्रसंग है—मुझे तेज बुखार तथा उल्टी हो रही थी। डॉक्टर ने कहा—इन्हें पहले भोजन कराएँ फिर टेबलेट देनी है। मैंने कहा—आहार की बिलकुल भी रुचि नहीं है, पहले टेबलेट दे दीजिए। थोड़ी देर में ठीक होने पर आहार करूँगी। उन्होंने कहा—मैं आहार ले आई हूँ, थोड़ा-सा खा लो। उन्होंने एक-एक कोर हाथ से देकर आहार करवाया और फिर टेबलेट दी। बीमारी के समय सहृदयतापूर्ण वात्सल्य भाव आज भी मेरी स्मृति पटल पर अंकित है। सेवा की अनमोल प्रेरणा है।

राग मायन-मायन मुंडेर पे!

● समणी विपुलप्रज्ञा, समणी आदर्शप्रज्ञा ●

समण श्रेणी की पहली समणी, स्थितप्रज्ञा जी कहाए।
गुरु किरपा से बनी साध्वी, स्थितप्रभा कहलाए।।
मन मजबूती न्यारी थी, कभी नहीं वो हारी थी।

संकल्पबली वो आत्मबली थी, सिंहवृत्ति से जीती,
अपनी मस्ती में जीना, वो हँसते-खिलते रहती,
मृत्यु का उन्हें भय न सताया, ना कहीं घबरायी।
गुरु किरपा----

स्वावलंबी जीवन था उनका, बहती दिल में करुणा,
समता से सब सही वेदना, बहा शांति का झरणा,
स्मृतियाँ केवल शेष रही हैं, याद हमें वो आएँ।
गुरु किरपा----

कितनों को पीएच०डी० करवाई, थी स्वाध्यायी, ज्ञानी।
प्रेक्षाध्यान में रुचि देखी, बनी वो मौनी, ध्यानी।
गुरुनिष्ठा, संघनिष्ठा निराली, श्रद्धा शीश झुकाएँ।।
गुरु किरपा----

अर्हम

● समणी मृदुप्रज्ञा ●

संघ रो मान बढ़ायो,
श्रेणी रो मान बढ़ायो।
देख्यो थारो अजब नजारो झटपट
काम संवारयो।।

देखी श्रद्धा अद्भुत भारी
गुरु इंगित सर्वोपरी
नियम पालता तन स्यूँ, मन स्यूँ
कहता साची खरी-खरी
पापभीरूता, जप स्वाध्याय
शुद्ध भावां स्यूँ पाल्यो।।

स्वावलंबी जीवन जीकर
थे करी निर्जरा भारी
अंतिम समय मनोबल समता
मिली प्रेरणा थांरी
नित-नियम प्रति जागरूकता
नैया पार लगायो
भव-भव रा कर्म खपाओ।।

लय : संयममय जीवन हो---

✦ *किसका है? यह मत देखो। क्या है? इस पर ध्यान दो। अच्छा विचार व अच्छी कृति, फिर वह किसी की भी क्यों न हो, स्वीकार कर लो।*

✦ *अपनी आवाज को सुनने वाला, अपने आपको देखने वाला और अपना हित चाहने वाला व्यक्ति अपना मित्र होता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

✦ विद्या संस्थानों में लौकिक विद्या पढ़ाई जाती है। इसके साथ अलौकिक अर्थात् आत्मविद्या पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।
—आचार्यश्री महाश्रमण

मनोनुशासनम्

❑ आचार्य तुलसी ❑

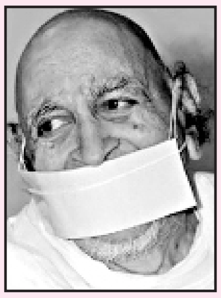

पहला प्रकरण

हिताहार की कसौटियाँ निम्न हैं—

(१) शरीर की शक्ति-क्षय का निवारण, (२) शरीर की वृद्धि, (३) शरीर को उचित ताप-प्रदान, (४) बलकारक, (५) शीघ्र पाचन, (६) अनुत्तेजक, (७) स्मृति, आयु, वर्ण, ओज, सत्त्व एवं शोभा की वृद्धि।

मिताहार—परिमित भोजन करना। भोजन की निश्चित मात्रा का निर्देश करना कठिन है। जितना खाने पर एक घंटा बाद भी पेट पर भार न हो, पानी पीने से पेट फटता न हो, वह मितभोजन है।

सात्त्विकाहार—मादक व उत्तेजक वस्तुओं का वर्जन, शरीर-इंद्रिय व मन की प्रसन्नता व लाघव में बाधा न पड़े, वैसा भोजन।

इंद्रिय-शुद्धि के उपाय

(१) इंद्रियों का सम्यक् योग, (२) प्रतिसंलीनता।

इंद्रियों की प्रवृत्ति के तीन प्रकार हैं—अयोग, अतियोग और योग। इंद्रियों की सर्वथा प्रवृत्ति न करना अयोग है। उनकी मर्यादा से अधिक प्रवृत्ति करना अतियोग है। ये दोनों इंद्रिय-दोष उत्पन्न करते हैं। इंद्रियों की उचित प्रवृत्ति करना योग है।

इंद्रियाँ ज्ञान के साधन हैं। वे विषयों के प्रति व्यापृत होती हैं, यह उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है। यह शक्य नहीं कि आँखें हों और वे रूप या वर्ण को न देखें। यह शक्य नहीं कि कान हों और वे शब्द न सुनें। यह शक्य नहीं कि घ्राण हो और उसे गंध की अनुभूति न हो। यह शक्य नहीं कि रसना हो और उसे इसकी अनुभूति न हो। यह शक्य नहीं कि स्पर्शन हो और उसे स्पर्श की अनुभूति न हो। इंद्रियों के योग का संबंध हमारे स्वास्थ्य से है जबकि उसके सम्यग् योग का संबंध हमारी साधना से है। साधक को आँख प्राप्त है, इसलिए वह रूप को देखता है पर उसके साथ कल्पनाओं का योग नहीं करता। स्पर्शन और विकार एक नहीं है। इंद्रियों के द्वारा दृश्य जगत् का ज्ञान करना ऐन्द्रियिक ज्ञान है। यह ज्ञान कल्पना से मिश्रित होकर राग-द्वेष से जुड़ जाता है तब वह ऐन्द्रियिक विकार हो जाता है। सम्यग् योग का अर्थ है वर्तमान में प्राप्त विषयों को जानना, उनके साथ अतीत की स्मृति और भविष्य की कल्पनाओं को न जोड़ना—केवल रूप को देखना, केवल शब्द को सुनना, केवल गंध, रस और स्पर्श की अनुभूति करना।

इंद्रिय-शुद्धि का दूसरा उपाय प्रतिसंलीनता है। इंद्रिय-शुद्धि की प्रथम भूमि में विषय और इंद्रियों के संबंध की शुद्धि का अभ्यास किया जाता है और द्वितीय भूमिका में विषयों से संपर्क-विच्छेद का अभ्यास किया जाता है। आँख बंद कर लेना—यह रूप के साथ चक्षु का संबंध-विच्छेद है। कान बंद कर लेना—यह शब्द के साथ श्रोत का संबंध-विच्छेद है। नाक को बंद कर लेना—यह गंध के साथ घ्राण का संबंध-विच्छेद है। आहार नहीं करना—यह रस के साथ रसना का संबंध-विच्छेद है। स्पर्श नहीं करना—यह स्पर्श के साथ स्पर्शन का संबंध-विच्छेद है। इंद्रियों का बहिर्जगत् में प्रयोग न करना, उन्हें अपने-अपने क्षेत्रों में ही सीमित रखना प्रतिसंलीनता है।

इंद्रियों की बाह्यलीनता समाप्त कर उनमें अंतर्लीनता उत्पन्न करना, यह भी प्रतिसंलीनता है। यह आकर्षण के विकर्षण का सिद्धांत है। अंतर् के प्रति आकर्षण कम होगा तो बाह्य के प्रति आकर्षण अधिक होगा। बाह्य के प्रति आकर्षण कम होगा तो अंतर् के प्रति आकर्षण बढ़ जाएगा। आकर्षण की दो भूमिकाएँ हैं—बाह्य और अंतरंग। इंद्रियों की शक्ति अंतरंग आकर्षण की ओर मुड़ जाए तो अंतरंग शक्ति का स्रोत खुल जाता है। दोनों भूमिकाओं का तुलनात्मक रूप निम्न यंत्र से स्पष्ट हो जाएगा—

बाह्याकर्षण	अंतर्-आकर्षण
बाह्य ध्वनि	अंतर्-ध्वनि
बाह्य दर्शन	अंतर्-दर्शन
बाह्य गंध	अंतर्-गंध
बाह्य रस	अंतर्-रस
बाह्य स्पर्श	अंतर्-स्पर्श

हमारी चेतना अशब्द, अरूप, अगंध, अरस और अस्पर्श है।

हम अंतर्-ध्वनि के प्रति आकर्षण उत्पन्न कर शुद्ध चेतना की भूमिका में नहीं पहुँच पाते हैं। इस प्रयत्न में हम केवल स्थूल से सूक्ष्म जगत् तक पहुँच पाते हैं। हमारे सूक्ष्म शरीर के साथ भी शब्द, रूप, रस, गंध और स्पर्श का संबंध होता है। उसी के प्रति एकाग्र होकर हम अपनी इंद्रिय-शक्ति का नया आयाम प्राप्त करते हैं।

आनापानशुद्धि के उपाय

(१) प्राणायाम। (२) समतालश्वास। (३) दीर्घश्वास। (४) कायोत्सर्ग।

प्राणायाम—प्राणवायु के विस्तार को प्राणायाम कहा जाता है। उसके तीन अंग हैं—

(१) पूरक। (२) रेचक। (३) कुम्भक।

हम प्राणवायु को नथुनों द्वारा खींचकर नाभि तक ले जाते हैं, वह पूरक है। प्राण को नाभि से उठाकर नथुनों द्वारा बाहर ले जाते हैं, वह रेचक है। जिस अवस्था में प्राणवायु का ग्रहण और विसर्जन नहीं करते, वह कुम्भक हैं यह श्वास को रोकने की अवस्था है। श्वास को भीतर ले जाकर रोकते हैं, उसे अंतःकुम्भक कहा जाता है। उसे बाहर ले जाकर रोकते हैं उसका नाम बहिःकुम्भक है।

प्राण हमारी नाड़ियों से प्रवाहित होता है। वह कभी बाएँ नथुने से प्रवाहित होता है। उस मार्ग को इड़ा नाड़ी या चंद्रस्वर कहा जाता है। प्राण कभी दाएँ नथुने से प्रवाहित होता है, उस मार्ग को पिंगला नाड़ी या सूर्यस्वर कहा जाता है। प्राण कभी दोनों नाड़ियों के बीच में प्रवाहित होता है, उस मार्ग का नाम सुषुम्ना नाड़ी है। चंद्रस्वर शीत और सूर्यस्वर उष्ण होता है। सुषुम्ना में सहज ही मन स्थिर हो जाता है। कपालभाति प्राणायाम से सुषुम्नास्वर चलने लग जाता है।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ❑

(१२०)

अंतस का ताप हरो तुम तो
तन-ताप स्वयं ढल जाएगा।
जन-जन का पाप हरो तुम तो
मन-दीप स्वयं जल जाएगा।।

जब बरसे तुम जलधर बनकर
जीवन-धरती अंकुरित हुई
सुन बोल तुम्हारे अमियपगे
जड़ में चेतनता स्फुरित हुई
पा परस तुम्हारे चरणों का
माटी भी कुंदन बन निखरी
दो पल भी तुम रुक गए जहाँ
सहसा अनुपम आभा बिखरी
कर में शर-चाप धरो तुम तो
हिमशिखर स्वयं गल जाएगा।।

जीवनभर अनुसंधान किया
जग रहा देखता परछाईं
विष पी उगला पीयूष सदा
सरिता पौरुष की लहराई
सपने देखे नित नए-नए पर
जड़ जमीन में थी गहरी
व्यामोह न अपने चिंतन का
तुम बने रहे सच के प्रहरी
क्षमता बिन माप भरो तुम तो
कोई न मुझे छल पाएगा।।

तुम चले सहज हर दिन अनथक
रुकने का नाम नहीं भाया
तुम जले अंधेरों में बिन शक
बुझने का समय नहीं आया
तुम फले कल्पतरु बन मरु में
पथिकों को मिली सुखद छाया
क्यों छले गए हम प्रभु तुमसे
अब कहाँ मिलेगा वह साया
जीवन के पाप हरो तुम तो
अभिशाप स्वयं टल जाएगा।।

वह दिव्य रूप श्री तुलसी का
आँखों से कब ओझल होता
कानों के आसपास कल-कल
बहता है गीतों का सोता
वह अतल जिंदगी का सागर
मन लगा रहा उसमें गोता
धोता अपना कल्मष पूरा
क्यों अवसर ऐसा वह खोता
पुनरपि संलाप करो तुम तो
सार्थकता वह पल पाएगा।।

(क्रमशः)

संबोधि

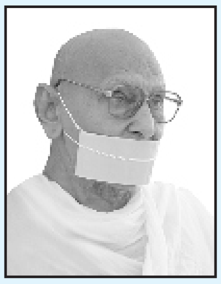

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(१९) अकामं नाम बालानां, मरणं जायते मुहुः।
पण्डितानां सकामं तु, अल्पादल्पं सकृद् भवेत्।।

बाल—असंयमी जीवों का बार-बार अकाम-मरण होता है। पंडित—संयमी जीवों का सकाम-मरण होता है और वह अधिक बार नहीं होता—कम से कम एक बार और उत्कृष्टतः पंद्रह बार होता है, फिर वह मुक्त हो जाता है।

(२०) पतित्वा पर्वताद् वृक्षात्, प्रविश्य ज्वलने जले।
म्रियते मूढचेतोभिः, अप्रशस्तमिदं भवेत्।।

मूढ चेतना वाले लोग पर्वत या वृक्ष से नीचे गिरकर, अग्नि या जल में प्रवेश कर मरते हैं, वह अप्रशस्तमरण-अकाममरण कहलाता है।

(२१) ब्रह्मचर्यस्य रक्षायै, कुर्यात् प्राणविसर्जनम्।
प्रशस्तं मरणं प्राहुः, रागद्वेषाऽप्रवर्तनात्।।

ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिए प्राणों का विसर्जन करना प्रशस्त मरण—सकाममरण कहलाता है, क्योंकि वहाँ राग-द्वेष की प्रवृत्ति नहीं होती।

आत्महत्या प्रशस्त नहीं है। उसके पीछे जो हेतु है उसमें जिजीविषा का भाव प्रधान है। जिन कारणों से आत्महत्या की जाती है, उनकी पूर्ति हो जाने पर वह रुक सकती है। आत्महत्या की ओर व्यकित तभी अग्रसर होता है जब उसके स्वाभिमान पर चोट आती है, कोई भयंकर विपत्ति आ जाती है, गहरा आघात लगता है, जो चाहता है वह प्राप्त नहीं होता है—आदि। इन सबके मूल में राग-द्वेष प्रमुख हैं। किंतु जहाँ इनमें से कोई करण उपस्थित न हो, व्यक्ति अपने नश्वर शरीर को अनुपयोगी मान राग-द्वेष से विमुक्त अवस्था में शरीर को छोड़ने का उपक्रम करता है, वह आत्महत्या नहीं है। आत्महत्या आवेश में होती है। आवेश या आवेग समाप्त हो जाने के बाद आप उसे मरने के लिए कहेंगे तो वह तैयार नहीं होगा। किंतु स्वेच्छापूर्वक शरीर के विसर्जन में कोई आवेश या आवेग नहीं है। मृत्यु चाहे आज आए या कल, उसे आप सर्वदा शांत और प्रसन्न पाएँगे। मृत्यु उसके लिए भयावह नहीं है और न पीड़ा का कारण है।

(२२) यस्य किञ्चिद् व्रतं नास्ति, स जनो बाल उच्यते।
व्रताव्रतं भवेद् यस्य, स प्रोक्तो बालपण्डितः।।

जिसमें कुछ भी व्रत नहीं होता, वह मनुष्य 'बाल' कहलाता है। जिसके व्रत-अव्रत—दोनों होते हैं—पूर्ण व्रत भी नहीं होता और पूर्ण अव्रत भी नहीं होता, वह 'बाल-पंडित' कहलाता है।

(२३) पंडितः स भवेत् प्राज्ञो, यस्य सर्वव्रतं भवेत्।
सुप्तः सुप्तश्च जाग्रच्य, जाग्रद्युक्तिविधानतः।।

जिसके पूर्ण व्रत होता है वह प्राज्ञ पुरुष 'पंडित' कहलाता है। पूर्वोक्त रीति के अनुसार पुरुषों के तीन प्रकार होते हैं—(१) सुप्त, (२) सुप्त-जागृत, (३) जागृत। अव्रती को सुप्त, व्रताव्रती को सुप्त-जागृत और सर्वव्रती को जागृत कहा जाता है।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ❑

धर्म बोध

तप धर्म

प्रश्न १० : भिक्षाचरी किसे कहते हैं, उसके कितने प्रकार हैं?

उत्तर : अभिग्रह युक्त खाद्य संयम करना तथा भिक्षाचरी—गोचरी के नियमों का पालन करना भिक्षाचरी तप है। इसका दूसरा नाम वृत्तिसंक्षेप या वृत्ति परिसंख्यान है। इसके छह, सात, आठ व तीस प्रकार भी मिलते हैं। आठ प्रकार के गोचराग्रों सात एषणाओं तथा अन्य विविध प्रकार के अभिग्रहों के द्वारा भिक्षावृत्ति को संक्षिप्त किया जाता है।

प्रश्न ११ : रस परित्याग किसे कहते हैं, उसके कितने प्रकार हैं?

उत्तर : दूध-दही आदि रसीले पदार्थों का वर्जन रस परित्याग है। इसके नौ प्रकार हैं—(१) निर्विकृति—विगय रहित आहार। (२) प्रणीत रस परित्याग—गरिष्ठ भोजन का परिहार। (३) आचाम्ल—अम्ल रस मिश्रित भात आदि का आहार। (४) आयाम सिक्थ भोजन—ओसामण से मिश्रित अन्न का आहार। (५) अरस आहार—हींग आदि से असंस्कृत आहार। (६) विरस आहार—पुराने धान्य का आहार। (७) अन्त्य आहार—तुच्छ धान्य का आहार। (८) प्रान्त्य आहार—ठंडा आहार। (९) रूक्ष आहार—चिकनाई रहित आहार।
इस तप का प्रयोजन 'स्वाद-विजय' है। इसलिए रस परित्याग करने वाला विकृति (विगय), सरस व स्वादिष्ट भोजन नहीं खाता।

(क्रमशः)

उपासना

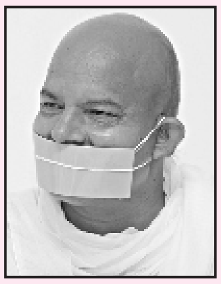

(भाग - एक)

❑ आचार्य महाश्रमण ❑

आचार्य तुलसी

आचार्यश्री महाप्रज्ञ

प्रज्ञापुरुष आचार्य महाप्रज्ञ युगप्रधान आचार्य तुलसी के सक्षम उत्तराधिकारी हैं। बुद्धि, प्रज्ञा, विनय और समर्पण का उनके जीवन में अद्भुत संयोग है। वे महान दार्शनिक, कवि, वक्ता एवं साहित्यकार होने के साथ-साथ प्रेक्षाध्यान पद्धति के महान अनुसंधाता एवं प्रयोक्ता हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ का जन्म वि०सं० १९७७ आषाढ़ कृष्णा त्रयोदशी को टमकोर (राजस्थान) के चोरड़िया परिवार में हुआ। उनके पिता का नाम श्री तोलारामजी एवं माता का नाम बालूजी था। बालक का नाम नथमल रखा गया। जब वे बहुत छोटे थे, तब पिता का साया उनके सिर से उठ गया। माता बालूजी धार्मिक प्रकृति की महिला थीं। उनकी धार्मिक वृत्तियों से बालक की धार्मिक चेतना उद्बुद्ध हुई। माता और पुत्र दोनों ही संयम-पथ पर बढ़ने के लिए समुत्सुक हुए।

वि०सं० १९८७ माघ शुक्ला दशमी को सरदारशहर में बालक नथमल ने अपनी माता के साथ पूज्य कालूगणी से दीक्षा ग्रहण की। उस समय उनकी आयु मात्र दस वर्ष थी। संयमी जीवन में उनकी पहचान मुनि नथमल के रूप में होने लगी।

मुनि नथमल अपनी सौम्य आकृति एवं सरल स्वभाव के कारण सबके प्रिय बन गए। पूज्य कालूगणी का उन पर असीम वात्सल्य था। कालूगणी के निर्देश से उन्हें विद्या-गुरु के रूप में मुनि तुलसी (आचार्य तुलसी) की सन्निधि मिली। मुनि नथमल की आशुग्राही मेधा विविध विषयों का ज्ञान करने में सक्षम हुई। दर्शन, न्याय, व्याकरण, कोश, मनोविज्ञान, ज्योतिष, आयुर्वेद आदि शायद ही कोई ऐसा विषय हो, जो उनकी प्रज्ञा की पकड़ से अछूता रहा हो। जैनागमों के गंभीर अध्ययन के साथ-साथ उन्होंने भारतीय एवं भारतीयेतर सभी दर्शनों का तलस्पर्शी एवं तुलनात्मक अध्ययन किया है। संस्कृत, प्राकृत एवं हिंदी भाषा पर उनका पूर्ण अधिकार है। वे संस्कृत भाषा के सफल आशुकवि हैं। राष्ट्रकवि रामधारीसिंह दिनकर के शब्दों में—'वे दूसरे विवेकानंद हैं।'

वि०सं० २०२२, माघ शुक्ला सप्तमी को हिसार (हरियाणा) में आचार्य तुलसी ने उन्हें निकाय-सचिव के गरिमामय पद पर विभूषित किया। वि०सं० २०३५ कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी, गंगाशहर में उन्हें 'महाप्रज्ञ' की उपाधि से अलंकृत किया। महाप्रज्ञ की उपाधि से अलंकृत करते समय आचार्य तुलसी ने कहा—'मुनि नथमलजी की अपूर्व सेवाओं के प्रति समूचा तेरापंथ संघ कृतज्ञता ज्ञापित करता है। यह 'महाप्रज्ञ' अलंकरण उस कृतज्ञता की स्मृति-मात्र है।"

वि०सं० २०३५ राजलदेसर मर्यादा महोत्सव के अवसर पर आचार्य तुलसी ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में उनकी घोषणा की। वि०सं० २०५० सुजानगढ़ मर्यादा महोत्सव के ऐतिहासिक समारोह के मध्य आचार्य तुलसी ने अपने आचार्यपद का विसर्जन कर युवाचार्य महाप्रज्ञ को आचार्यपद पर प्रतिष्ठित कर दिया।

यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि आचार्य महाप्रज्ञ को आचार्य तुलसी जैसे समर्थ गुरु मिले तो आचार्य तुलसी को आचार्य महाप्रज्ञ जैसे समर्पित शिष्य एवं योग्य उत्तराधिकारी मिले। विश्व क्षितिज पर आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जैसी आध्यात्मिक विभूतियाँ गुरु-शिष्य के रूप में शताब्दियों के बाद प्रकट होती हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ आचार्य तुलसी के हर आयाम में और हर कदम पर अनन्य सहयोगी रहे हैं। गुरु के प्रत्येक निर्देश को क्रियान्वित करने एवं उनके द्वारा प्रारंभ किए हुए कार्य को उत्कर्ष के बिंदु तक पहुँचाने में वे सदा प्रस्तुत रहे हैं।

तेरापंथ की प्रगति-यात्रा के हर आरोह-अवरोह में आचार्य महाप्रज्ञ ने अपने गुरु आचार्य तुलसी के सधे हुए द्रुतगामी कदमों का सदा साथ निभाया है। यह कहना असंगत नहीं होगा कि तेरापंथ और आचार्य तुलसी को विश्व-प्रतिष्ठित करने में आचार्य महाप्रज्ञ की भूमिका अनन्य रही है।

(क्रमशः)

✦ सहना चाहिए, मौके पर कहना भी चाहिए और शांति के साथ रहना चाहिए।
—आचार्यश्री महाश्रमण

साध्वी स्थितप्रभा जी के प्रति आध्यात्मिक उद्गार

सेवा से खेवा - साध्वी स्थितप्रभाजी

● समणी सन्मतिप्रज्ञा ●

❑ समण श्रेणी की प्रथम सदस्या–रत्नाधिक समणी स्थितप्रज्ञा जी–साध्वी स्थितप्रभा का रूप धारण कर त्वरता से विलीन हो गईं। वे चली गईं? विश्वास नहीं हो रहा। भाग्यशाली थीं वो, तेरापंथ के तीन-तीन आचार्यों का पोषण प्राप्त कर स्वयं को समृद्ध बनाया था उन्होंने। समण श्रेणी में उन्हें 'बापजी' कहा जाता था।

❑ आज उनका चेहरा बार-बार सामने आ रहा है। पिता का बीज पिता की तरह उसी वार, उसी तिथि को अपनी जीवन यात्रा को विराम दे गईं। क्यों न हो ऐसा अपने पिता के स्वभाव से कई बातें थीं उनके स्वभाव में। ऐसा लग रहा है। संयम और संथारे के साथ अपनी देह का विसर्जन कर दिया। पुण्यशालिनी थीं वो!

❑ समण श्रेणी में उनका जीवन कठोर परिश्रमी, प्रयोगधर्मा, बच्चे जैसा आग्रही मन और नियमों की पकड़ के रूप में याद रहेगा। अपने अथक श्रम से वे जैन विश्व भारती संस्थान से जुड़ी, शोध कार्य किया और अनेक शोध-विद्यार्थियों के गाइड रूप में रहे। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की एक-दो पुस्तकों का संपादन भी किया था–ऐसा मेरे स्मरण में है।

❑ अनेक तप, जप और ध्यान के प्रयोग भी जीवन के पूर्वार्द्ध में उन्होंने किए थे। प्राणायाम की साधना उनकी काफी अच्छी थी। मर्यादा महोत्सव के समय-रात्रि को वे समणी जी को आमंत्रित कर प्राणायाम के प्रयोग से कुर्सी/छोटा पट्ट जमीन से ऊपर उठा दिया करते थे।

❑ वे कभी-कभी हठी हो जाती थीं। लेकिन उनके हठ में शठता नहीं बल्कि बालक-सा भोलापन झलकता था। कभी-कभी लाडनूं प्रवास में सायं अर्हत् वंदना के पश्चात् आदरणीया समणी मधुरप्रज्ञा जी एवं खासकर आदरणीया समणी कुसुमप्रज्ञा जी के साथ स्वस्थ नोक-झोंक वाले संवाद उनका वास्तविक परिचय देते थे।

❑ यात्रा से लौटकर जब भी उनके पास वंदना, खमतखामणा एवं सुखसाता पूछने के लिए जाते, वे विस्तार से अपनी सेहत के बारे में बताते।

❑ नियमों के प्रति पकड़ कभी-कभी अखरने वाली भी हो जाती थी। कभी-कभी अनावश्यक भी लगती थी, लेकिन ये उनकी अपनी विशेषता थी। नियोजिका पद पर जो भी नियुक्त किया जाता वे उनके प्रति हमेशा आदरभाव की ऊँचाइयों पर रहते।

❑ समण दीक्षा की अनुमति से लेकर स्वास्थ्य तक की उनकी परीक्षाएँ कभी उनके मजबूत मन पर हावी नहीं हो पाई।

❑ सौभाग्य तो देखो उनका–गईं तो थीं शासन गौरव नातिले साध्वीश्री कनकश्री जी की सेवा के लिए और झटपट अपना खेवा पार कर लिया उन्हीं के हाथों से। 'सेवा से मेवा' की कहावत तो सुनी है पर 'सेवा से खेवा' वाली नई कहावत उन्होंने गढ़ दी। नमन इस आत्मा को, स्मरण इस व्यक्तित्व का, कामना–हर जन्म में आध्यात्मिक ऊँचाइयाँ प्राप्त करें---।

उदारमना समणी स्थितप्रज्ञा

● समणी श्रद्धाप्रज्ञा ●

समण दीक्षा के पश्चात् मेरा अधिक समय लाडनूं में व्यतीत हुआ। मैंने अनुभव किया कि आपके जीवन की उदारता से हमें लाभ मिला। जब कभी गोचरी में कोई द्रव्य आता आप हमारे लिए सुरक्षित रखती।

हम ऊपरी मंजिल में रहते फिर भी इंतजार करती एवं हमें वह द्रव्य प्रदान करवाती।

आपके साथ चुरू (राजस्थान) की यात्रा का अवसर मिला। आदरणीय साध्वीवर्याजी (समणी समताप्रज्ञा) भी उस समय साथ थी। आपने जो मेरा ध्यान रखा उसे मैं कैसे भूलूँ? मैं चाहती हूँ रत्नाधिक सम्मान में मेरा समय व्यतीत हो। मैं आपके भावी जीवन की आध्यात्मिक शुभकामना करती हूँ।

अर्हम्

● समणी भावितप्रज्ञा ●

जन्म लेते वक्त सभी व्यक्ति कोरे कागज की तरह होते हैं पर जाते वक्त उस कोरे कागज पर अपनी कहानी लिखकर जाते हैं। परिणामतः वह कहानी दूसरों के लिए प्रेरक बन जाती है। समण श्रेणी की प्रथम समणी, समणी स्थितप्रज्ञा जी जो श्रेणी के लिए नींव का पत्थर थी। उनकी जीवन कहानी से हमें कई प्रेरणाएँ मिलती हैं। मुझे सम्माननीय साध्वी स्थितप्रज्ञा जी के साथ यात्रा करने का सुअवसर मिला, यह मेरा अपना सौभाग्य था। जब हमने चेन्नई सेंटर की यात्रा की, उन्होंने मुझे हर दृष्टि से विकास की दिशा में आगे बढ़ाया। उन्होंने मुझे संकल्पबद्ध किया कि इस दक्षिण यात्रा में गणाधिपति गुरुदेव तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ जी की दृष्टि के अनुरूप English में प्रगति करनी है। रोटरी क्लब, लोगस्स क्लब, स्कूल, कॉलेज, मठ आदि उन्हीं पर भी कार्यक्रम होता तो आप प्रेरणा-दीप बनकर मेरे उत्साह को शतगुणित करती, यही वजह थी कि गुरुकृपा व बड़ों की शुभ दृष्टि से प्रोग्रामों में English में, मैं अपने विचारों की प्रस्तुति दे पाती।

मेरे जीवन विकास व साधना में आपका सहयोग प्रशंसनीय रहा। आपने अपने जीवन में साधना के विभिन्न प्रयोग किए–मार्केपडिया, प्रेक्षाध्यान की विशेष साधना, मंत्र, जप, स्वाध्याय, संपादन आदि। आज जागरूक, अप्रमत्त रहने के साथ-साथ बहुत ही सरल, सहज व प्रसन्न रहती थी। वे उठा करती थी–मेरे निश्चित कर्मों का उदय है, कर्म किए हैं तो भोगने पड़ेंगे। शारीरिक वेदना में अपने क्षमता-भाव को बनाए रखने का प्रयास करती। वे पंचनिष्ठा–आलनिष्ठा, आज्ञानिष्ठा, गुरुनिष्ठा, अम्बारनिष्ठा, मर्यादानिष्ठा की उपासिका थी। यूँ कहूँ तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी–

अपने प्रति, गुरु के प्रति और लक्ष्य के हेतु,
सहज समर्पण भाव है स्वयं सिद्धि का सेतु।

मेरे परम उपकारी, प्रोत्साहनदाता, प्रेरणादीप साध्वी स्थितप्रज्ञाजी की पवित्र आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि, आध्यात्मिक मंगलकामना।

जीवन धन्य बणायो...

● डॉ० समणी ज्योतिप्रज्ञा ●

समण श्रेणी रा पहला समणी श्रेणी ने चमकायो
जीवन धन्य बणायो
जीवन सफल बणायो।।

समण श्रेणी में साध्वीप्रमुखा सहदीक्षित कहलाया,
नए तीर्थ री नींव जमाई रोप्या गहरा पाया,
दीक्षा भूमि जन्म भूमि चंदेरी मान बढ़ायो।

चार विषय में स्नातकोत्तर री शिक्षण डिग्री पाई,
पहला डॉक्टर SOL विभागाध्यक्ष री पदवी पाई,
मांइ पडिया वर्षी तप कर तपसण नाम कहायो।

तप जप आगम सज्झाय में पल-पल रमता रहता,
कष्टां में थे समता रखता, भिक्षु-भिक्षु जपता,
जो भी धार्‌यो कर दिखलायो, पौरुष दीप जलायो।

तुलसी महाप्रज्ञ गुरु महाश्रमण री सेवा साझी,
शासनमाता रो संरक्षण सारी स्मृतियाँ ताजी,
जयपुर में इतिहास बणायो, जस झंडो लहरायो।

लय : नैतिकता की सुरसरिता में----

चारित्र निष्ठा

● साध्वी सविताश्री 'लाडनूं' ●

समणी स्थितप्रज्ञा जी के अस्वस्थता के दौरान अनेक बार दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके मन चारित्र के प्रति प्रबल भावना थी। बड़े अहोभाव के साथ कहती कि वह दिन धन्य होगा जब मैं भी चारित्र रत्न को प्राप्त हो‌ऊँगी। वय में हम छोटे थे लेकिन उनका वंदना व्यवहार प्रशस्य था। दिल के बड़े उदार थे बहुत बार कहते गोचरी पधार रहे हो तो अमुक स्थान पर 'जोगवायी' है। लाडनूं निवासिनी होने से हमारे ज्ञातिजनों के गोचरी आदि पधारना, दर्शन देना आदि उनकी जागरूकता का परिणाम है।

चारित्र की भावना अंत समय में फलवती बनी, वह भी संथारापूर्वक अपने लक्ष्य को प्राप्त किया। आध्यात्मिक प्रगति की मंगलकामना।

दृढ़-संकल्पी समणी स्थितप्रज्ञा

● समणी विनीतप्रज्ञा ●

समणी स्थितप्रज्ञा जी का जीवन स्वावलंबन का जीता-जागता उदाहरण था। आप दृढ़-संकल्पी थी। जो सोच लिया, तो रात को जागकर भी उसको पूरा करती। आपकी अपनी व्यवस्थित दिनचर्या थी, अधिकांश समय मंत्र-जप में बीतता था। आपकी मंत्र साधना में बल भी था। ऐसे लगता है कई मंत्र आपने साध लिए थे। 'योग पडिया' जैसी कठोर पडिया आपने पूरी की। आपने पीएच०डी० के साथ चार विषय में एम०ए० करके कीर्तिमान स्थापित किया। जो काम स्वयं कर सकते, उसे आप दूसरे से करवाना नहीं चाहती थी। लाडनूं में अथवा मर्यादा महोत्सव के अवसर पर यदा-कदा आपके पास बैठने का अवसर मिला।

लगता है आपके जीवन में वेदनीय कर्म का प्रबल उदय था। आपने समता भाव से वेदना को सहन किया। स्थितप्रज्ञा से साध्वी स्थितप्रभा बनी, अनशन स्वीकार किया और शासन गौरव साध्वी कनकश्री जी की सन्निधि में अपना काम सिद्ध कर लिया। आपकी आत्मा आध्यात्मिक विकास को प्राप्त करती हुई शीघ्र मंजिल को प्राप्त करे। ऐसी मंगलकामना करते हुए श्रद्धासिक्त भावों से श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ।

समण श्रेणी की प्रथम पंक्ति की प्रथम सदस्या तुम कहलाई।
मर्यादानिष्ठा गुरुभक्ति सीख सदा जीवन से पाई।।

श्रमनिष्ठा पहचान बनाकर
स्वावलंबन पाठ पढ़ाया।
मंत्र जाप की कुशल साधिका
बनकर अंतर ज्योत जलाई।।

जो भी धारा पार उतारा, दृढ़ संकल्प शक्ति के द्वारा।
घोर वेदना में भी तुमने मंत्र जाप की अलख जगाई।।

स्नेह मिला वात्सल्य मिला
और मिला सदा अपनापन भाव।
करूँ समर्पित श्रद्धांजलि
धरकर उर में श्रद्धा का भाव।।

अर्हम्

● समणी हर्षप्रज्ञा ●

मुझे दीक्षा लिए हुए ११ साल हो गए। मुझे प्रथम बार समणी स्थितप्रज्ञा जी की सेवा में रहने का अवसर प्राप्त हुआ। समणी स्थितप्रज्ञा जी वैसे स्वावलंबी थी और अनुशासनप्रिय समणीजी थी।

वे इस उम्र में भी अपना कार्य स्वयं करती थी। जप-स्वाध्याय के प्रति पूर्ण जागरूक थी। हमें अपना परम सौभाग्य है कि मुझे साध्वीवर्याजी ने इनकी सेवा में नियुक्त किया। मैं भी अपने जीवन में उनके गुणों को आत्मसात करूँ, यही इच्छा है।

१५९वें मर्यादा महोत्सव पर विशेष आलेख

आस्था पुष्टि का विशिष्ट पर्व है-मर्यादा महोत्सव

❑ मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ❑

अकेले व्यक्ति के लिए कोई नियम-कानून अथवा मर्यादा नहीं होती किंतु परिवार, समाज अथवा राष्ट्र होता है। जहाँ सामूहिक जीवन होता है। वहाँ कानून या मर्यादा होना अत्यावश्यक होता है। मर्यादाहीन परिवार, समाज या राष्ट्र स्वयं के साथ दूसरों के लिए भी घातक सिद्ध हो जाता है। आज प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्रतापूर्वक जीना पसंद करता है। जो अच्छी बात है। किंतु स्वच्छंदता अच्छी नहीं होती। स्वतंत्र अर्थात् स्वयं पर शासन। जिस व्यक्ति का स्वयं की वृत्तियों पर नियंत्रण होता है। वहाँ किसी प्रकार की समस्या नहीं होती। समस्या वहाँ खड़ी होती है। जहाँ स्वच्छंदता होती है। स्वच्छंद अर्थात् अपनी मनमर्जी अर्थात् मैं जो कुछ भी करूँ मुझे कोई रोके नहीं टोके नहीं। वहाँ परिवार, समाज तथा राष्ट्र में विघटन पैदा हो जाते हैं। जो बिखराव और टकराव पैदा कर अनेक समस्याओं से घिर जाता है।

मर्यादा अर्थात् संविधान। वैसे प्रत्येक राष्ट्र, समाज, संगठन का अपना संविधान होता है। संविधान की धाराओं के अनुसार हर कार्य व्यवस्थित रूप से चलता रहता है। राष्ट्र, समाज की मर्यादाएँ अपनी होती हैं तो धर्मसंघों की अपनी मर्यादाएँ व्यवस्था और अनुशासन होता है। वर्तमान में तेरापंथ धर्मसंघ जो आचार्य भिक्षु द्वारा लगभग ढाई सौ वर्षों पूर्व स्थापित हुआ था। उसकी विलक्षणता यह है कि इसकी मर्यादाओं का केवल वाचन या पठन ही नहीं बल्कि हृदय से पालन भी होता है। क्योंकि ये मर्यादाएँ जबरन थोपी हुई नहीं होती बल्कि आत्म साक्षी भाव से सहज स्वीकृत होती हैं। वीर प्रसुता मारवाड़ की पुण्य धरा पर जन्मा एक महामानव जिसने संन्यास मार्ग को स्वीकार कर धर्मक्रांति का शंखनाद किया। धर्मसंघों में पनप रही शिथिलता को दूर करने के लिए अनेक परिषहों को सहन करके भी आगे बढ़ते रहें। अपने लोह-हाथों से जो लकीरें खींची, वे लकीरें तेरापंथ धर्मसंघ की ऐसी प्राणवान मर्यादाएँ बन गई हैं। जिनका पालन करने वाला साधक साधना की भूमिका में आगे बढ़ता हुआ गौरव की अनुभूति करता है। क्योंकि इन मर्यादाओं के साथ उसका प्रशस्त विवेक जुड़ा हुआ है। जिससे उन मर्यादाओं का अवमूल्यन नहीं होकर सही ढंग से मूल्यांकन हो पाया है।

यद्यपि आज का युग तार्किक युग है। तर्क का युग होने से व्यक्ति हर बात को तर्क से साबित करना चाहता है। जिससे उसकी अनुपालना सहज नहीं हो पाती। फिर भी तेरापंथ धर्मसंघ का प्रत्येक साधक मर्यादाओं के प्रति पूर्णतः श्रद्धावान आस्थावान होकर पालन करता है। धर्मसंघ के सर्वोच्च आचार्य पद पर आसीन संचालक आचार्य भी कुशलतापूर्वक साधक की अंतश्चेतना में मर्यादाओं के प्रति आस्था पैदा करते हैं। सक्षम व सफल नेतृत्व वही कहलाता है, जो धर्मसंघ के प्रत्येक सदस्य को साथ लेकर चल सके और वे ही मर्यादाएँ सफल व सार्थक होती है। जो युगानुकूल और तर्क सम्मत होती है। आचार्य भिक्षु महान विलक्षण मेधा के धनी पुरुष थे। जब धर्मसंघ का विस्तार हो रहा था तब उन्होंने संघ की सुव्यवस्था के लिए कुछ मर्यादाएँ बनाई। वे मर्यादा निर्माता बने और धर्मसंघ की दृष्टि से उन मर्यादाओं को धर्मसंघ के प्रत्येक सदस्य ने आचरण में स्वीकार किया।

कालांतर में तेरापंथ के चतुर्थ आचार्य हुए श्रीमद् जयाचार्य। उन्होंने मर्यादाओं की आस्था पुष्टि के लिए मर्यादा महोत्सव मनाना प्रारंभ किया। अतः इस महोत्सव का नामकरण हो गया—मर्यादा महोत्सव। जो प्रत्येक वर्ष में एक बार माघ शुक्ला सप्तमी को वर्तमान आचार्य की सन्निधि में आयोजित होता है। आचार्य भिक्षु को किसी एक व्यक्ति ने प्रश्न किया—भीखणजी आपका यह धर्मसंघ कब तक चलेगा। आचार्य भिक्षु ने समाधान देते हुए कहा—जब तक धर्मसंघ के साधु-साध्वियाँ निष्ठा के साथ मर्यादाओं का पालन करते रहेंगे। मात्र सात साधुओं की विद्यमानता में बनाई गई मर्यादाएँ आज सात सौ अधिक साधु-साध्वियों में उसी प्रकार पालन की जा रही है। वे मौलिक मर्यादाएँ पाँच हैं—यथा

(१) प्रत्येक साधु-साध्वी एक आचार्य की आज्ञा में रहें।

(२) विहार—चातुर्मास आचार्य की आज्ञा से करें।

(३) अपना-अपना शिष्य-शिष्या न बनाएँ।

(४) दलबंदी-गुटबंदी न करें।

(५) पद के लिए उम्मीदवार न बने।

इस प्रकार ये छोटी-छोटी मर्यादाएँ व्यक्ति के जीवन को उच्चता व शिष्टता प्रदान करने वाली है। मर्यादा और अनुशासन के अभाव में व्यक्ति का जीवन आदर्श को प्राप्त नहीं कर सकता तथा जीवन उच्छृंखल बन जाता है। आज भारतीय संविधान की जिस प्रकार धज्जियाँ उड़ रही हैं। जिसके कारण वह निम्न स्तर पर जाता हुआ परिलक्षित हो रहा है। कारण स्पष्ट है संविधान के प्रति अनास्था भाव। वह राष्ट्र, समाज या संघ कभी विकास नहीं कर सकता जहाँ अनुशासन, मर्यादा, व्यवस्थाओं को गौण कर केवल अपने स्वार्थ का पोषण होता है। आस्था के अभाव में केवल मर्यादाएँ कल्याणकारी साबित नहीं हो सकती। वहाँ मर्यादा का मान बढ़ता है। जहाँ प्रगाढ़ आस्था के साथ मर्यादाएँ आत्मसात् होती हैं। आज राजनीति के क्षेत्र में कानून जो डंडे के बल पर थोपा जाता है। और आरोपित किया जाता है। उसके पालन में भी अनेक प्रकार की गलियाँ निकाल ली जाती हैं। वर्तमान में भारत की आजादी के इतने वर्ष होने के बावजूद संविधान की धाराओं में बार-बार संशोधन किया जा रहा है। जबकि तेरापंथ के दो सौ से अधिक समय होने के बावजूद मूल मर्यादाओं में परिवर्तन की अपेक्षा नहीं हुई।

यद्यपि उत्तरवर्ती आचार्यों ने समय सापेक्ष कुछ मर्यादाएँ बनाई हैं तो उनमें परिवर्तन भी किया है। मर्यादा महोत्सव के अवसर पर वर्तमान आचार्य की आज्ञा से साधु-साध्वियाँ विहार करते हैं। चातुर्मास की घोषणा होने पर उस दिशा में प्रस्थान करते हैं। जन-जन के मध्य मर्यादा, अनुशासन, व्यवस्था, पारस्परिक सौहार्द, मानवीय एकता का संदेश प्रसारित करते हुए कल्याण मार्ग पर बढ़ते रहते हैं।

स्वतंत्र भारत में १५ अगस्त व २६ जनवरी का जो महत्त्व है। उससे भी तेरापंथ में मर्यादा महोत्सव का महत्त्व अधिक माना गया है। अच्छा तो यही है। भारत के प्रत्येक नागरिक के मन में अपने संविधान के प्रति आस्था भाव हो वे संविधान का अतिक्रमण न करे। दिल और दिमाग में विवेक पुष्ट रहे। जिससे कृतज्ञ भारत पुनः अपनी प्रतिष्ठा को बरकरार रखने में कामयाब हो सकेगा। मर्यादा महोत्सव संघीय पर्व है। किंतु इससे कोई भी व्यक्ति प्रेरणा ले सकता है।

> ✦ *आलोचना से नहीं, गलत कार्य से डरो।*
> — आचार्यश्री महाश्रमण

साध्वी स्थितप्रभा जी के प्रति आध्यात्मिक उद्‌गार

अर्हम्

● साध्वी मधुलता ●

धन्य धन्य समणी स्थितप्रज्ञा, फैलाया नव उजियारा।
संयम संथारा स्वीकारा।।
संपन्न हुई विजयी यात्रा, गूँजे चिहुँदिशि में जयकारा।
निर्मल परिणामों की धारा।।

आधि व्याधि उपाधि मुक्त जो परम समाधि का पथ चुनते।
दर्शन-ज्ञान-चरण के सूत्रों से संचेतन पट बुनते।
उनका नाम चमकता जैसे नभमंडल में ध्रुवतारा।।

कहते ज्ञानी शांत संतुलित संयम जीवन एक कला।
पंडित मरण वरण मृत्युंजय बनने की है महाकला।
तन की ममता छूटे तब ही टूटे कर्मों की कारा।।

गुरु आज्ञा से जयनगरी जयपुर में स्वल्प प्रवास हुआ।
साध्वीभगिनी की सन्निधि पा मानस में उल्लास हुआ।
सहसा हुआ असातोदय उपचार सघन सभा द्वारा।।

मनोबली श्रमशीलता दृढ़-संकल्पी प्रतिभा की स्फुरणा।
संयम-नियमनिष्ठ, परहित तत्पर दिल में अतिशय करुणा।
ध्यान जाप में रहता था झंकृत साँसों का इकतारा।।

धर्मसंघ में गुरुकरुणा से पाया जो आत्मिक वैभव।
गणनंदन वन में कर अर्पित बना लिया हर पल उत्सव।
स्थितप्रभा साध्वीजी को प्रभु महाश्रमणजी ने तारा।।

लय : जागो बहनों नव प्रभात---

अर्हम्

● समणी निर्वाणप्रज्ञा ●

व्यक्ति जन्म लेता है, जीवन जीता है और संसार से विदा हो जाता है। जन्म और मृत्यु उनकी सफल व सार्थक होती है जो संयम व साधना का जीवन जीता है। स्थितप्रज्ञा जी समणीजी को हमने नजदीकी से देखा है। उनकी तप, जप व ध्यान की साधना निरंतर गतिमान रही। उन्होंने साधना के ओर भी अनेक प्रयोग किए। उन्हें विलक्षण दीक्षा के प्रथम सदस्य बनने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। उनकी संकल्पशक्ति भी बेजोड़ थी। उन्होंने अपने जीवन में जब-जब भी कोई संकल्प स्वीकार किया, उसे पूर्ण करके ही विश्राम लेती थी।

मुझे स्मृति में आ रहा है, जब मैं उपासिका में थी तब उन्होंने रात्रि जागरण का संकल्प किया था। इसलिए मुझे रात्रि में उठाकर पढ़ाते, मेरी ध्यन साधना व अध्ययन में उनका पूर्ण सहयोग मिला। मैं उनकी अग्रिम आध्यात्मिक यात्रा की मंगलकामना करती हूँ।

महासभा आपके द्वार

औरंगाबाद।

संस्था शिरोमणि महासभा के उपाध्यक्ष अशोक तातेड़, आंचलिक प्रभारी अनिल सांखला व कार्यसमिति सदस्यगण डॉ० अनिल नाहर एवं निर्मल जैन को संपर्क संगठन यात्रा लेकर औरंगाबाद पधारे। उपाध्यक्ष ने महासभा के विभिन्न आयामों के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए सभा ट्रस्ट पंजीकरण कराने के बारे में मार्गदर्शन दिया।

महासभा से पधारे सभी सदस्यों का अध्यक्ष कौशिक सुराणा ने स्वागत किया। स्थानीय तेरापंथ सभा के पदाधिकारी एवं सदस्य भी इस कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

ज्ञानशाला के विविध आयोजन

उत्तर हावड़ा

उत्तर हावड़ा क्षेत्र में आंचलिक संयोजिका डॉ० प्रेमलता चोरड़िया अपने अभिनव चिंतन के साथ क्षेत्र में चारों ज्ञानशाला के सार-संभाल के लिए पधारी। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के साथ हुई। बच्चों ने ज्ञानशाला गीत द्वारा अपनी प्रस्तुति दी।

उत्तर हावड़ा के संयोजक प्रदीप बैद ने सभी का स्वागत किया एवं कार्यक्रम का संचालन किया। सभा के अध्यक्ष राकेश संचेती ने बच्चों को ज्ञानशाला आने की प्रेरणा दी। ज्ञानशाला आंचलिक संयोजिका डॉ० प्रेमलता चोरड़िया ने ज्ञानशाला की निमयों एवं सभा के दायित्व पर अपने विचार व्यक्त किए। सह-संयोजक संजय पारख ने बच्चों से कुछ प्रश्न पूछे और बच्चों को ज्ञानशाला के नियम अपनाने की प्रेरणा दी।

आंचलिक समिति के सदस्य मालचंद भंसाली ने कहानी के माध्यम से बच्चों को बताया कि हमारे जीवन में संस्कारों का क्या महत्त्व है। महिला मंडल अध्यक्षा अलका सुराणा ने सभी अभिभावकों से निवेदन किया कि वे अपने बच्चों को ज्ञानशाला अवश्य भेजें। अभिभावकों ने अपने विचार व्यक्त किए।

आभार ज्ञापन उत्तर हावड़ा ज्ञानशाला की क्षेत्रीय सह-संयोजिका सरिता पटावरी ने किया। कार्यक्रम में उत्तर हावड़ा ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका मंजु कोठारी, ममता नाहटा, ज्ञानशाला की क्षेत्रीय संयोजिका सुजाता दुगड़, सभा के उपाध्यक्ष जेठमल श्यामसुखा, सहमंत्री रवि छाजेड़ एवं महावीर दुगड़ उपस्थित थे।

गंगाशहर

शांति निकेतन, तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में ज्ञानशाला का नियमित संचालन किया जाता है। ज्ञानशाला की संयोजिका संजू लालाणी ने बताया कि तेरापंथी महासभा के ज्ञानशाला प्रकोष्ट के निर्देशानुसार संपूर्ण देश में ज्ञानार्थी परीक्षा का आयोजन किया गया। गंगाशहर में परीक्षा का शुभारंभ सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी कीर्तिलता जी के द्वारा मंगलपाठ से किया गया।

ज्ञानशाला के क्षेत्रीय संयोजक व तेरापंथी सभा के मंत्री रतनलाल छल्लानी द्वारा केंद्र से प्राप्त प्रश्न-पत्र परीक्षार्थियों व प्रशिक्षिकाओं के समक्ष साध्वीश्री के सान्निध्य में खोला। परीक्षा केंद्र व्यवस्थापक देवेंद्र डागा ने बताया कि परीक्षा में शिशु संस्कार बोध भाग-१ के ७५ ज्ञानार्थी, भाग-२ के २८ ज्ञानार्थी, भाग-३ के १७ ज्ञानार्थी, भाग-४ के ७ ज्ञानार्थी तथा भाग-५ के ५ ज्ञानार्थी कुल १३२ ज्ञानार्थी शामिल हुए।

मुख्य प्रशिक्षिका प्रेम बोथरा ने बताया कि प्रशिक्षिका सुनीता पुगलिया, मोनिका संचेती, रुचि छाजेड़, बुलबुल बुच्चा, श्रीया गुलगुलिया, जयश्री भूरा, सरिता आंचलिया, सुनिता डोसी, रक्षा बोथरा, भाविका सामसुखा, मुदिता डाकलिया, शीतल नाहटा, कुसुम पारख, कनक गोलछा, मोनिका बैद द्वारा ज्ञानार्थियों की मौखिक परीक्षा ली गई।

सहप्रभारी चैतन्य रांका ने बताया कि शोभित सेठिया, रजनीश गोलछा, रोहित बैद, जयेश छाजेड़, महावीर फलोदिया आदि कार्यकर्ताओं ने परीक्षा के संचालन में अपना श्रम नियोजित किया।

गोरेगाँव (मुंबई)

तेरापंथ भवन के प्रांगण में ज्ञानशाला के विद्यार्थियों की एस०एस०बी० की परीक्षा का आयोजन किया गया। जिसमें २८ बच्चों ने परीक्षा दी। बाहर से परीक्षा लेने महिला मंडल से सह-संयोजिका ममता चिप्पड़ की उपस्थिति रही। संतोषनगर से लीला, पुजा, निकिता की सहभागिता रही एवं स्थानीय व्यवस्था में जॉन संयोजिका भावना सांखला, परामर्शक उत्तर देवी सिंघवी एवं नियती तलेसरा ने निर्वाहन किया।

परीक्षा के पेपर ज्ञानशाला संयोजक संपत सांखला, तेयुप अध्यक्ष महादेव रमेश सिंघवी के नेतृत्व में ओपन किया गया। सभी अभिभावकों एवं बच्चों की उपस्थिति रही।

स्थानीय रेखा सिंघवी एवं अलका आच्छा, मनीषा मुणोत, नागरदास रोड में परीक्षा में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। पदाधिकारियों एवं समाज से सराहनीय उपस्थिति एवं सहयोग रहा।

टिटिलागढ़

स्थानीय तेरापंथ भवन में शिशु संस्कार बोध भाग-१ से ५ तक के परीक्षा का आयोजन किया गया। परीक्षा का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण व गुरु वंदना से किया गया। टिटिलागढ़ सभा के उपाध्यक्ष तथा ज्ञानशाला के व्यवस्थापक रूपचंद जैन, ज्ञानशाला की संयोजिका कृष्णा जैन तथा प्रशिक्षिका बहनों की उपस्थिति में केंद्र द्वारा प्राप्त प्रश्न-पत्र खोले गए।

भाग-१ की परीक्षा संतोष जैन एवं शुभ्रा जैन, भाग-२ की परीक्षा भावना जैन, भाग-३ की परीक्षा खुशबू जैन एवं संगीता जैन, भाग-४ की परीक्षा सुंदरी जैन एवं स्नेहा जैन तथा भाग-५ की परीक्षा कृष्णा जैन एवं मीनू जैन ने ली। भाग-१ में १२, भाग-२ में ५, भाग-३ में ४, भाग-४ में ४ तथा भाग-५ में ४ इस तरह टोटल २६ ज्ञानार्थियों ने परीक्षा में भाग लिया।

परीक्षा की पूरी व्यवस्था ज्ञानशाला की संयोजिका कृष्णा जैन एवं मुख्य प्रशिक्षिका भावना जैन ने केंद्र द्वारा निर्देशित समस्त नियमों का पालन करते हुए किया। परीक्षा को सुचारु रूप से संपादित कराने में टिटिलागढ़ ज्ञानशाला के सभी प्रशिक्षिकाओं का एवं ज्ञानशाला व्यवस्थापक रूपचंद जैन का पूरा सहयोग रहा।

बेहाला

बेहाला क्षेत्र में आंचलिक संयोजिका डॉ० प्रेमलता चोरड़िया, सह-संयोजक संजय पारख, आंचलिक समिति के सदस्य मालचंद भंसाली की उपस्थिति में कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। बेहाला सभा के अध्यक्ष जयसिंह धारीवाल, मंत्री अशोक बैंगानी, सह-संयोजक अशोक सिंघी एवं प्रशिक्षिका पुष्पा सिंघी, ५ ज्ञानार्थी एवं उनके अभिभावक उपस्थित थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ ज्ञानार्थियों के द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुआ। बेहाला सभा के अध्यक्ष और मंत्री ने सबका स्वागत किया। डॉ० प्रेमलता ने कहा कि ज्ञानार्थी कम या ज्यादा हो सकते हैं पर ज्ञानशाला बंद नहीं होनी चाहिए और बेहाला सभा के दायित्व के बारे में अपने विचार व्यक्त किए।

मालचंद ने बच्चों को कहानी के माध्यम से समझाया कि अपना ज्ञान और बल सही दिशा में लगाएँ। सह-संयोजक संजय ने बच्चों से प्रश्न पूछे, जिसका बच्चों ने सही जवाब दिया। प्रशिक्षिका पुष्पा सिंघी ने धन्यवाद एवं आभार ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन किया।

उदयपुर

तेरापंथी सभा, ज्ञानशाला, उदयपुर द्वारा तेरापंथी महासभा के निर्देशानुसार शासनश्री मुनि सुरेश कुमार जी 'हरनावा' के सान्निध्य में स्थानीय महिला मंडल प्रशिक्षण केंद्र, भुवाणा में ज्ञानशाला ज्ञानार्थी परीक्षा का आयोजन किया गया। जिसमें महिला मंडल अहिंसा प्रशिक्षण केंद्र के ११ कमरों में २२ प्रशिक्षिकाओं ने परीक्षा केंद्र व्यवस्थापक प्रतिभा इंटोदिया के निर्देशानुसार भाग : १-२०, भाग : २-६, भाग : ३-६, भाग : ४-१४, भाग :५-८ : कुल ६० ज्ञानार्थियों ने परीक्षा में भाग लिया।

मुनि संबोध कुमार जी के मंगल पाठ के साथ सभा मंत्री विनोद कच्छारा ने प्रश्न-पत्र का लिफाफा खोला। इस अवसर पर नियोजक मंडल के सदस्यगण, सभा के सदस्य सूर्यप्रकाश मेहता, तेयुप के सदस्य अजीत छाजेड़, महिला मंडल सदस्या सीमा बाबेल, महिला मंडल अध्यक्षा सीमा पोरवाल, तेयुप अध्यक्ष अक्षय बड़ाला, तेयुप मंत्री विक्रम पगारिया, ज्ञानशाला परामर्शक फतहलाल जैन, नरेंद्र चव्वाण, ज्ञानशाला संयोजिका सुनीता बैंगानी, सह-संयोजिका सुनीता नंदावत सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे।

अमराईवाड़ी

अमराईवाड़ी ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों की वार्षिक परीक्षा सानंद संपन्न हुई। सभा अध्यक्ष रमेश पगारिया, मंत्री गणपत हिरण, उपासिका मंजुदेवी गेलड़ा, संयोजक राजेंद्र बाफना, नरेंद्र दुगड़ एवं सभी प्रशिक्षिकाओं की उपस्थिति में पेपर खोले गए।

ज्ञानशाला की क्षेत्रीय संयोजिका लीला सुराणा एवं सह-संयोजिका आशा खाब्या ने वीडियो कॉल द्वारा बच्चों को शुभकामनाएँ प्रेषित की। उपासिका मंजु देवी गेलड़ा ने बच्चों को पूरे आत्मविश्वास और सजगता के साथ परीक्षा देने की प्रेरणा दी। सभा अध्यक्ष रमेश पगारिया ने प्रशिक्षिकाओं के श्रम को सराहते हुए बच्चों के प्रति मंगलकामनाएँ प्रेषित की। भाग : १-१०, भाग : २-४, भाग : ३-४, भाग : ४-२, भाग : ५-३ कुल २३ बच्चों ने परीक्षा दी। सभी ने पूर्ण प्रमाणिकता से परीक्षा दी। सभी ने पूर्ण प्रामाणिकता से परीक्षा दी। सभी प्रशिक्षिकाओं का अच्छा सहयोग रहा।

औरंगाबाद

तेरापंथी महासभा ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के तत्त्वावधान में साध्वी मधुस्मिता आदि के सान्निध्य में केंद्र द्वारा निर्धारित ज्ञानशाला ज्ञानार्थी परीक्षा-२०२२ तेरापंथ भवन में संपन्न हुई।

कुल २३ ज्ञानार्थियों ने उत्साह के साथ परीक्षा में अपनी सहभागिता दर्ज कराई।

प्रश्न पत्र खोलते समय सभा के पूर्व मंत्री संजय सेठिया, महिला मंडल की उपाध्यक्षा छाया नहार, तेयुप के अध्यक्ष एवं ज्ञानशाला परीक्षा केंद्र व्यवस्थापक विवेक बागरेचा, शेष महाराष्ट्र पूर्व आंचलिक संयोजिका माया मूथा, क्षेत्रीय ज्ञानशाला संयोजिका मीना सेठिया एवं ज्ञानशाला मुख्य प्रशिक्षिका लता सेठिया एवं ६ प्रशिक्षिकाएँ उपस्थित थी। सभी प्रशिक्षिकाओं और ज्ञानार्थियों को साधुवाद।

जलगाँव

तेरापंथी महासभा ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के तत्त्वावधान में संपूर्ण भारत एवं विदेशों में एक साथ आयोजित ज्ञानशाला की मौखिक परीक्षा जलगाँव में भी सुचारु ढंग से संपन्न हुई। कुल ४५ बच्चों ने उत्साह के साथ परीक्षा में अपनी सहभागिता दर्ज कराई।

प्रश्न पत्र खोलते समय शेष महाराष्ट्र के आंचलिक संयोजक राजकुमार सेठिया, सभा अध्यक्ष जितेंद्र चोरड़िया, मंत्री नीरज समदरिया, तेयुप अध्यक्ष सुदर्शन बैद, टीपीएफ अध्यक्ष संजय चोरड़िया, ज्ञानशाला संयोजक नोरतमल चोरड़िया एवं ज्ञानार्थी बच्चों की परीक्षा लेने के लिए आमंत्रित किए गए सदस्य महिला मंडल अध्यक्षा नम्रता सेठिया, उपाध्यक्षा स्नेहलता सेठिया सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम को सफल बनाने में विशेष सहयोग मिला कन्या मंडल से कुमारी दिशा छाजेड़ एवं प्रियंका समदरिया का।

नोखा

सद्संस्कार, विनम्रता ज्ञानशाला के द्वारा संभव है। ये विचार महावीर चौक स्थित तेरापंथ भवन में साध्वी राजीमती जी ने ज्ञानार्थियों को मंगलपाठ सुनाते हुए रखे। उन्होंने कहा कि भौतिकता, विलासिता के युग में ज्ञानशाला जैसा उपक्रम विशेष बात है। बच्चे कच्चे घड़े जैसे होते हैं। उन पर जैसा रंग चढ़ाएँ चढ़ जाता है।

प्रारंभ से ही सद्संस्कार ज्ञानशाला से प्राप्त होते हैं। विनम्रता, सेवा परोपकारिता अपनत्व, जीव-अजीव यह सूक्ष्म संस्कार ज्ञानशाला में ही संभव है। ज्ञानशाला प्रभारी नाहटा ने व्यवस्था का दायित्व संभाला। सभा अध्यक्ष निर्मल भूरा ने बताया कि ४५ ज्ञानार्थियों की परीक्षा प्रशिक्षिका सुमन मालू, राजश्री मरोठी, धारा लूणावत, अनु भूरा, विभा आंचलिया, नीतू जैन, सीमा घीया, जागृति मरोठी, मोनिका भूरा, सरिता बैद, रुखमणी, आरती धाड़ेवा ने विधिवत ली।

संगोष्ठी का आयोजन

गोरेगाँव (मुंबई)।

साध्वी निर्वाणश्री जी आदि साध्वीवृंद के सान्निध्य में तेयुप की संगोष्ठी संपन्न हुई। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। तेयुप अध्यक्ष रमेश सिंघवी ने सभी का स्वागत किया।

साध्वी योगक्षेमप्रभा जी ने कहा कि कितनी भी विघ्न-बाधाएँ आएँ, देव, गुरु, धर्म कृपा में विश्वास रखना चाहिए। गुरु सही राह दिखाता है, उनकी इंगित की आराधना करें।

आभार ज्ञापित तेयुप मंत्री सुमित चोरड़िया ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में राकेश बोहरा, कमलेश धाकड़, रवि सोलंकी, ध्रुव राठौड़, उचित सोनी, तरुण जैन आदि युवाओं की सहभागिता रही।

नव वर्ष पर विविध कार्यक्रमों के आयोजन

औरंगाबाद

साध्वी मधुस्मिताजी के सान्निध्य में नववर्ष का आध्यात्मिक बृहत् मंगलपाठ से पानदरीबा तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। साध्वीवृंदों के द्वारा सुंदर गीतिका का संगान किया गया।

साध्वी मधुस्मिताजी ने समय नियोजन के विषय को रोचक कहानी के द्वारा उपस्थित धर्म समाज को प्रेरित किया। साध्वीश्री जी ने सभी को संयम एवं विवेक के साथ कार्य करने के लिए सलाह दी।

अंत में साध्वीश्री जी ने नववर्ष का आध्यात्मिक बृहत् मंगलपाठ का वाचन किया। साध्वीश्री के सान्निध्य में खानदेश तेरापंथी सभा एवं तेयुप, जलगाँव के कैलेंडर का विमोचन किया गया। इस अवसर पर सभा के अध्यक्ष कौशिक सुराणा, तेयुप के मंत्री अंकुर लुणिया ने सभी का स्वागत एवं आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर जालना, बीड, जलगाँव एवं अन्य क्षेत्र के लोग भी उपस्थित हुए।

राजगांगपुर

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में नव वर्ष मंगलपाठ एवं मंगलकामना कार्यक्रम आयोजित हुआ। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि हम केवल नया वर्ष ही नहीं नया दिन मनाएँ। हमें प्रतिदिन नया दिन मिलता है। मिलने वाली वस्तु का सदुपयोग या दुरुपयोग करना यह आपका चिंतन होता है। चौबीस घंटे का समय हमें प्रतिदिन मिलता है। स्वयं का लक्ष्य ऊँचा बनाएँ। दूसरों के लिए भी हमारा जीवन मंगलमय बनें।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि वर्ष समाप्ति के साथ दिन बदला। कैलेंडर भी हम बदल देते हैं। कैलंडर बदलने के साथ-साथ हम अपनी सोच भी बदलें। सोच बदलने से हमारा व्यवहार एवं आचरण बदलता है। नई सोच के साथ नए वर्ष में प्रवेश करें। हम अपनी आदतों में परिवर्तन लाएँ। अपनी जीवन यात्रा को सुखद बनाने के लिए सबसे पहले स्वयं के प्रति मंगलकामना करें। जिस व्यक्ति के साथ हमारी बोलचाल का व्यवहार बंद है उसके प्रति मंगलकामना शुभभावना करें। जब तक हम स्वयं को नहीं बदलते तब तक कपड़े, मकान या कैलेंडर बदलने से भला होने वाला नहीं है। स्वाध्याय, ध्यान एवं आत्मचिंतन के द्वारा अपने जीवन में परिवर्तन लाएँ।

कार्यक्रम का शुभारंभ कन्याओं के स्वागत गीत से हुआ। बगुमुंडा से तुलसी जैन, राजगांगपुर सभा अध्यक्ष हेमंत कोठारी, महिला मंडल अध्यक्षा संगीता बुच्चा, कांटाबाजी सभा अध्यक्ष युवराज जैन, बलांगीर से संजीव जैन, राउरकेला महिला मंडल, प्रांतीय सभा अध्यक्ष मुकेश जैन, कांटाबाजी महिला मंडल, कन्या मंडल ने गीत एवं वक्तव्य द्वारा अपनी मंगलकामना व्यक्त की।

आभार ज्ञापन रोहित जैन ने किया। कार्यक्रम का संचालन वंदिता जैन एवं ऋषभ जैन ने किया। कोलकाता, कांटाबाजी, कटक, बलांगीर, बगुमुंडा, सिंधिकेला, कुरसुर, झारसुगुडा, राउरकेला, चक्रधरपुर, खरगपुर क्षेत्रों के श्रावक समाज उपस्थित रहे। मुनिश्री ने इस अवसर पर व्यसनमुक्त रहने का संकल्प करवाया। मुनिद्वय ने राजगांगपुर की सेवाभावना, धर्मनिष्ठा, जारूकता की प्रशंसा करते हुए प्रमोद भाव व्यक्त किए।

राजमुंद्री

मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में नव वर्ष-२०२३ के शुभारंभ के अवसर पर विशेष मंगलपाठ एवं 'नव वर्ष, हो हमारा उत्कर्ष' विषय पर मुनिश्री का विशेष उद्‍बोधन हुआ। कार्यक्रम तेरापंथी सभा द्वारा आयोजित किया गया।

मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि गत वर्ष को अलविदा और नए वर्ष का अभिनंदन हो रहा है। एक तरफ अतीत है, दूसरी तरफ भविष्य है। विदाई और बधाई के बीच हम खड़े हैं। सच्चाई यह है कि जो विदाई देना जानता है वही बधाई का हकदार भी होता है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि नव वर्ष पर उत्कर्ष के लिए तीन सूत्रों को अपनाना चाहिए–'भूलो और क्षमा करो'। छोटी-मोटी गलतियाँ होती रहती हैं। किसी से गाँठ न बाँधें। दूसरा–'प्रसन्नता'। हर समय प्रसन्न रहें। तीसरा–'संकल्प बल'। संकल्प बल से बड़ा बल कोई नहीं होता। पवित्र संकल्प से मन को भावित करते रहें।

मुनिश्री ने विविध 'वीतराग मंत्रों' से अनुष्ठान कराया और नव वर्ष पर विशेष मंगलपाठ सुनाया। बाल मुनि काव्य कुमार जी ने 'लोगस्स' एवं 'धम्मो मंगल' आदि गाथाओं का संगान कराया। कार्यक्रम को सफल बनाने में तेरापंथी सभा, राजमुंद्री का अच्छा श्रम रहा।

नोखा

नव वर्ष पर आप सभी नया संकल्प लें। उच्छृखलता-विलासिता न हो। संयम का जीवन जीना सीखें। अर्थोपार्जन के साथ अध्यात्म का स्वाद भी लें। सकारात्मकता जीवन में आए-अच्छे सेवा के कार्य करें। नमस्कार महामंत्र, पार्श्वनाथ का जाप, सामायिक नित्य जीवन का अंग बनाएँ–शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने प्रातः बृहद् मंगलपाठ द्वारा नव वर्ष पर अमृत पाथेय दिया।

इंदरचंद बैद ने बताया कि कड़ाके की ठंड में तेरापंथी सभा, महिला मंडल, तेयुप, कन्या मंडल सभी उत्साह से सम्मिलित हुए। तेयुप द्वारा अभिनव सामायिक का भी आयोजन हुआ। सैकड़ों सामायिक एक साथ साध्वीश्री जी ने करवाई। चैत्य पुरुष जाग जाए, पार्श्व स्तुति का संगान साध्वी समताश्री जी ने करवाया।

सभा अध्यक्ष निर्मल भूरा, तेयुप अध्यक्ष गजेंद्र पारख भी उपस्थित रहे।

जीव-अजीव पुस्तकाधारित जैन वाङ्‌मय प्रज्ञा परिमल कार्यशाला का आयोजन

अहमदाबाद।

कार्यशाला का शुभारंभ मुनि कुलदीप कुमार जी के सान्निध्य में प्रवचनकार मुनि मुकुल कुमार जी द्वारा ६ से ३१ दिसंबर, २०२२ तक हुआ।

२१ दिन चली इस कार्यशाला में मुनिश्री द्वारा जीव-अजीव पुस्तक के साथ जैन तत्त्व ज्ञान व भक्तांबर स्त्रोत जैसे विषय को बड़ी ही सरलता से रोचक तथ्यों व कहानियों के द्वारा समझाया गया। कार्यशाला में हर उम्र के श्रोताओं ने अच्छी संख्या में उपस्थिति हुए।

प्रतिदिन कार्यशाला के पश्चात क्विज रखी गई और अंतिम दिन कार्यशाला पर आधारित टेस्ट ली गई, जिसमें ४१ प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रथम स्थान ज्योति गोगोड, द्वितीय स्थान पर हर्षा पटावरी एवं तृतीय स्थान प्रवीणा बुरड़ ने प्राप्त किया। तेयुप द्वारा इन्हें पारितोषिक दिया गया। कार्यशाला में सांत्वना पुरस्कार मितेश जैन, मदन धुपिया, श्वेता लुनिया, उगमदेवी मेहर, विपुल कोठारी को दिया गया।

कार्यशाला में प्रायोजक विजयराज जयेशकुमार-किशोरकुमार संकलेचा परिवार का विशेष सहयोग मिला। प्रायोजक के बहुमान अध्यक्ष अरविंद संकलेचा, मंत्री दिलीप भंसाली, अभातेयुप सदस्य दिनेश बुरड़ द्वारा किया गया।

कार्यशाला में विशेष श्रम संयोजक जितेंद्र छाजेड़, भावेश हिरेन, विनय बाफना, पारस बोथरा, सुरेश सांखला, हितेश बागरेचा एवं निशांत भंसाली का रहा।

✦ *व्यक्ति आकृति से नहीं, प्रकृति से अधम अथवा महान् बनता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

एटीडीसी का एटीडीसी राष्ट्रीय कोर कमेटी द्वारा अवलोकन

बारडोली।

तेयुप, बारडोली द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एवं आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल स्टोर का अवलोकन करने आचार्यश्री तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर की राष्ट्रीय कोर कमेटी के सदस्य निर्मल बैंगानी, आलोक छाजेड़ और राष्ट्रीय प्रभारी अर्पित नाहर बारडोली पधारे।

अभातेयुप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयेश मेहता, तेयुप के मंत्री रौनक सरणोत, निवर्तमान अध्यक्ष महावीर दक, उपाध्यक्ष संजय बडोला, सहमंत्री संजय बड़ोला, कोषाध्यक्ष पीयूष बाफना ने उनका स्वागत अभिनंदन किया।

निर्मल बैंगानी, आलोक छाजेड़ ने एटीडीसी की गतिशीलता एवं ऑडिट करते हुए कई प्रश्न एवं कई प्रश्नोत्तरी की जानकारी ली एवं मार्केटिंग के नए फंडे, फाइनेंसियल लीकेज, सॉफ्टवेयर, डॉक्टर से सलाह-मशवरा, एटीडीसी के विस्तृतीकरण, समस्याओं के समाधान के अंतर्गत कई जानकारी प्रेषित की।

एटीडीसी मुख्य कर्मचारी मनोज प्रजापति ने संपूर्ण रिपोर्ट प्रस्तुत की एवं गतिविधि की जानकारी दी। तेयुप की देशभर की समस्त एटीडीसी हेतु यह सार-संभाल यात्रा के अंतर्गत तेयुप के अध्यक्ष साहिल बाफना ने कृतज्ञता ज्ञापित की।

कई समस्याओं एवं सुझाव का कोर कमेटी ने त्वरित प्रत्युत्तर प्रदान किया।

अमराईवाड़ी।

तेयुप, अमराईवाड़ी-ओढव द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, अमराईवाड़ी का अवलोकन करने पधारे राष्ट्रीय एटीडीसी कोर कमेटी सदस्य निर्मल बैंगानी एवं आलोक छाजेड़ का तेयुप के अध्यक्ष हेमंत पगारिया द्वारा स्वागत अभिनंदन किया गया।

एटीडीसी संयोजक कैलाश बाफना एवं मुकेश सिंघवी ने अमराईवाड़ी एटीडीसी के बारे में संपूर्ण जानकारी प्रदान की। राष्ट्रीय एटीडीसी कोर कमेटी सदस्य निर्मल बैंगानी एवं आलोक छाजेड़ ने सभी गतिविधियों की जानकारी ली एवं सभी पहलुओं पर सवाल करते हुए परिषद द्वारा जवाब को लिपिबद्ध किया।

इस मीटिंग में एटीडीसी टीम के सदस्य दिनेश चंडालिया, दिनेश सिंधवी, अशोक सिंधवी, हेमंत पगारिया, हितेश चपलोत की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री हितेश चपलोत ने किया।

राजाजीनगर।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने तेयुप, बैंगलोर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, राजाजीनगर का अवलोकन किया। मंत्री विकास बाबेल एवं कोषाध्यक्ष पवन चोपड़ा ने साध्वीवृंद का स्वागत किया। संयोजक रोहित कोठारी और तरुण पटावरी ने यहाँ संचालित गतिविधियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

साध्वीश्री जी ने तेयुप द्वारा संचालित मानव सेवा के इस उपक्रम की उपयोगिता पर प्रकाश डाला एवं तेयुप, बेंगलुरु द्वारा संचालित गतिविधियों को युवकों की जागरूकता का प्रमाण बताया।

इस अवसर पर आलोक कुंडलिया, भरत रायसोनी, ऋषभ सेठिया, पूर्व अध्यक्ष प्रकाश जोगड़, जितेंद्र घोषल, तेरापंथ सभा, तेयुप एवं महिला मंडल से पदाधिकारीगण एवं कार्यकर्ता तथा गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

सीपीएस कार्यशाला का आयोजन

वडोदरा।

तेयुप, वडोदरा ने दूसरी बार सीपीएस का आयोजन किया। सभा अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, तेयुप अध्यक्ष-मंत्री सहित कुल १८ संभागी ने यह कोर्स किया। ट्रेनर पिंकेश गादिया, ललित बेगवानी एवं चिराग पामेचा के अथक प्रयास से सभी संभागियों ने अपने अंदर एक अद्‍भुत परिवर्तन पाया एवं स्टेज का जो डर था वह उनके मन से निकल गया।

अभिनव सामायिक फेस्टिवल के विविध आयोजन

बठिंडा

साध्वी कनकरेखा जी के सान्निध्य में नव वर्ष का शुभारंभ व अभातेयुप द्वारा सामायिक फेस्टिवल का कार्यक्रम उत्साह के साथ मनाया गया।

प्रथम चरण में अभिनव सामायिक फेस्टिवल की शुरुआत त्रिपदी वंदना के साथ हुई। जप, ध्यान आदि का प्रयोग साध्वी केवलप्रभा जी ने करवाया। स्वाध्याय के महत्त्व को उजागर करते हुए साध्वी कनकरेखा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि नव वर्ष का प्रारंभ हम सामूहिक सामायिक के साथ करने जा रहे हैं। तेयुप की यह सूझबूझ वास्तव में विश्व मैत्री दिवस के साथ जुड़ी हुई है। युद्ध की विभिषिका को शांत कर हम अध्यात्म में प्रवेश करें, अमूल्य सामायिक के महत्त्व को समझें।

बठिंडा का श्रावक समाज बड़ा ही जागरूक है, सभी में अच्छा उत्साह है, सामायिक का यह नजारा वास्तव में प्रशंसनीय रहा।

कार्यक्रम के दूसरे चरण में साध्वीश्री जी ने कहा कि सन् २०२२ को अलविदा एवं २०२३ को वेलकम करने के साथ हमें अनुचिंतन करना है, आत्मनिरीक्षण, आत्मपरीक्षण करना है–हमने क्या खोया, क्या पाया? वर्ष भर का लेखा-जोखा करने का यह सुनहरा अवसर है। अपेक्षा है हम अपनी संस्कृति व संस्कारों को सुरक्षित रखें।

बयालिस वर्षों के पश्चात साध्वी गुणप्रेक्षाश्री जी अपनी संयम जन्मभूमि में पहली बार पधारी। गुरुदेवश्री तुलसी के करकमलों से दीक्षित साध्वी गुणप्रेक्षाश्री जी ने आराध्य अभ्यर्थना के साथ अपने विचार रखे।

साध्वी संवरविभा जी, साध्वी केवलप्रभा जी, साध्वी हेमंतप्रभा जी ने नव वर्ष पर सुमधुर गीत का संगान किया। साध्वीश्री जी ने शुभकामना व्यक्त की। सभाध्यक्ष राजीव जैन ने पूरे बठिंडावासियों की ओर से साध्वीश्री जी का स्वागत करते हुए विचार रखे। बृहद् मंगलपाठ का श्रवण करने डबवाली, हनुमानगढ़, जोतो मंडी, गुणी मंडी आदि क्षेत्रों से उपस्थिति रही। सभा मंत्री डॉ० योगेश जैन एवं पूरी टीम का कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग रहा।

दक्षिण (मुंबई)

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा अभिनव सामायिक १३५ महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल के विशाल प्रांगण में हुई। कार्यक्रम की शुरुआत में १० मिनट नमस्कार महामंत्र का जाप, १० मिनट ॐ भिक्षु-जय भिक्षु का जाप, ५ मिनट चइतां भारं वासं का जाप, फिर सामूहिक गीतिका का संगान किया गया। विघ्न हरण मंगल के साथ कार्यक्रम का समापन किया।

तेरापंथी सभा, दक्षिण मुंबई के अध्यक्ष गणपतलाल डागलिया ने सभी को नए वर्ष की शुभकामनाएँ दीं एवं २०२३ में हमारे भगवान आचार्यश्री महाश्रमण जी मुंबई पधार रहे हैं तो दक्षिण मुंबई में भी प्रवास रहेगा सभी को अवगत करवाया एवं सभी को प्रवास व्यवस्था समिति से जुड़ने का आह्वान किया।

तेयुप के अध्यक्ष नितेश धाकड़ ने स्वागत व आभार ज्ञापन किया। संचालन सभा मंत्री दिनेश धाकड़ ने किया। मंगलपाठ उपासक रंजीत कोठारी ने सुनाया। कार्यक्रम में आचार्य महाप्रज्ञ विद्या निधि फाउंडेशन, तेरापंथी सभा, तेयुप, तेमम, अणुव्रत क्षेत्रीय संयोजक, किशोर मंडल, तेरापंथ श्रावक समाज दक्षिण मुंबई आदि की विशेष उपस्थिति रही।

राजाजीनगर

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में नव वर्ष के अवसर पर सूर्य की पहली किरण के साथ वृहद् मंगलपाठ एवं सामूहिक अभिनव सामायिक महोत्सव का स्थानीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ/ट्रस्ट, बैंगलोर-एच० उत्तमचंद प्रमिला भंडारी सामायिक स्वाध्याय भवन के प्रांगण में तेरापंथ सभा द्वारा आयोजन हुआ।

कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुई। तेमम द्वारा मंगलाचरण, सभा अध्यक्ष रोशनलाल कोठारी, तेयुप अध्यक्ष अरविंद गन्ना, जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ/ट्रस्ट के अध्यक्ष नरेंद्र भंडारी एवं महिला मंडल अध्यक्षा चेतना वेद मूथा ने सभी का स्वागत करते हुए अपने विचार व्यक्त किए।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने कहा कि रंगोली दो दिन की होती है फिर भी उसे खूब सजाते हैं, ठीक वैसे ही जिंदगी भी कुछ वर्षों की है, इसे अच्छे कर्मों से सजाने की कोशिश करें। नए साल की पहली रोशनी की शुरुआत कुछ नए संकल्पों से शुरू करें। साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि नव वर्ष स्फटिक-सा उज्ज्वल, गंगा-सा निर्मल बने। नव वर्ष के आगमन पर शुभ भावों के थाल सजाकर विकास के नए-नए स्वास्तिक उकेरें। साध्वी मेरुप्रभा जी व साध्वी दक्षप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। लगभग ११५० से अधिक श्रावक-श्राविका समाज की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम के द्वितीय चरण में बेंगलुरु शहर की छः तेयुप–राजाजीनगर, बेंगलोर (गांधीनगर), एचबीएसटी (हनुमंतनगर, विजयनगर), राजराजेश्वरी नगर, यशवंतपुर एवं मंडिया परिषदों द्वारा सामूहिक रूप से समता की साधना सामायिक महोत्सव मनाया गया। सभी परिषदों के पदाधिकारियों द्वारा सामूहिक विजय गीत का संगान किया गया। अभूतपूर्व अभातेयुप अध्यक्ष विमल कटारिया ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। अभातेयुप महामंत्री पवन मांडोत ने नव वर्ष की शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। लगभग ६५० से अधिक सामायिक हुई।

इस अवसर पर गांधीनगर सभा अध्यक्ष कमल दुगड़, विजयनगर सभा अध्यक्ष प्रकाश गांधी, राजराजेश्वरी नगर सभा अध्यक्ष छतरसिंह सेठिया, यशवंतपुर सभा अध्यक्ष गौतम मूथा, हनुमंतनगर सभा अध्यक्ष तेजमल सिंघवी, मंडया सभा अध्यक्ष नरेंद्र दक एवं संपूर्ण सभा परिवार, महिला मंडल परिवार, अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरना, राष्ट्रीय सामायिक साधक सह-प्रभारी राकेश दक सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजन उपस्थित थे। संचालन सभा मंत्री मदनलाल बोराणा ने किया एवं आभार सभा सहमंत्री चंद्रेश मांडोत ने व्यक्त किया।

चेन्नई

अभातेयुप के अंतर्गत नव वर्ष के प्रथम रविवार को पूरे देश में एक साथ, एक समय अभिनव सामायिक फेस्टिवल का आयोजन किया गया। इसी क्रम में तेयुप, चेन्नई द्वारा तेरापंथ भवन, साहूकारपेट में अभिनव सामायिक का आयोजन किया गया।

उपासक श्रेणी महासभा शिविर राष्ट्रीय संयोजक जयंतीलाल सुराणा एवं जैन संस्कारक पदमचंद आंचलिया ने नमस्कार महामंत्र के समुच्चारण के बाद त्रिपदी वंदना के साथ अभिनव सामायिक की शुरुआत की। सामायिक प्रतिज्ञा, कायोत्सर्ग, प्रेक्षाध्यान के दीर्घ श्वास प्रेक्षा का प्रयोग करवाया, गीतिका का संगान हुआ।

तेयुप द्वारा आयोजित इस फेस्टिवल में विशेष रूप से अभातेयुप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रमेश डागा ने नव वर्ष की शुभकामनाएँ व्यक्त करते हुए कहा कि सामायिक से समता की साधना, आराधना की जाती है। अभातेयुप राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष भरत मरलेचा ने सामायिक की उपयोगिता बताते हुए कहा कि सामायिक सिद्धि प्राप्त की सीढ़ी है, उन्होंने श्रावक समाज की सहभागिता की सराहना की।

साहूकारपेट ट्रस्ट बोर्ड मुख्य न्यासी विमल चिप्पड़, महिला मंडल मंत्री रीमा सिंघवी ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर तेयुप पूर्वाध्यक्ष एवं परामर्शक विनोद डागा, सहमंत्री कोमल डागा और अन्य तेयुप साथी, किशोर मंडल साथी, अनेक गणमान्य व्यक्ति, श्रावक-श्राविका समाज की उपस्थिति रही।

तेयुप मंत्री संदीप मूथा ने सभी का स्वागत और संचालन करते हुए अभिनव सामायिक के प्रयोग कराने वाले उपासकों, उपासिकाओं और पधारे हुए सभी को साधुवाद दिया। अभिनव सामायिक संयोजक किस्तुर मूथा ने कार्यक्रम को सफल बनाने में सराहनीय श्रम किया एवं धन्यवाद ज्ञापन किया।

चलथान

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप, चलथान ने विश्व मैत्री की सद्भावना से अभिनव सामायिक फेस्टिवल का आयोजन किया। कार्यक्रम के अंतर्गत कुल २३ सामायिक हुई। तेयुप अध्यक्ष राकेश दक ने बताया कि उत्सव विश्व मैत्री का अभिनव सामायिक फेस्टिवल कार्यक्रम के माध्यम से अभातेयुप की ३५० से ज्यादा शाखाएँ पूरे देश में प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी सामायिक का एक अभियान चलाया गया, जिसमें हजारों की संख्या में श्रावक समाज ने सामायिक की।

सभा मंत्री राजेश सिंघवी ने बताया कि जैन धर्म में सामायिक का विशेष महत्त्व माना जाता है। सामायिक में व्यक्ति ४८ मिनट के लिए सारे सांसारिक कार्यों का त्याग करके आध्यात्म साधना में लीन हो जाता है। परिषद उपाध्यक्ष दीपक खाब्या ने बताया कि विश्व मैत्री की भावना व समाज के आध्यात्मिक विकास हेतु संस्था समय-समय पर ऐसे कार्य आगे भी करती रहेगी। तेयुप परामर्शक ज्ञान दुगड़ द्वारा अभिनव सामायिक करवाई गई।

अभिनव सामायिक फेस्टिवल में पधारे सभी का आभार अभिनव सामायिक सह-संयोजक कमलेश खाब्या ने किया।

ईरोड

अभातेयुप द्वारा निर्देशित उत्सव विश्व मैत्री का अभिनव सामायिक फेस्टिवल का आयोजन तेयुप द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया। जिसमें प्रमुख उद्बोधन उपासक हनुमानमल दुगड़ द्वारा नवकार महामंत्र से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। तत्पश्चात सामायिक प्रत्याख्यान करवाया गया। ध्यान के साथ उपासक रमेश पटावरी द्वारा त्रिपदी वंदना एवं उपासक प्रकाश पारख द्वारा अ सि आ उ सा का जप द्वारा उपासक हनुमानमल ने भगवान महावीर स्वामी के देशना में पूणिया श्रावक की सामायिक साधना का वर्णन किया।

तेरापंथ महासभा के उपाध्यक्ष नरेंद्र नखत एवं दुलीचंद पारख, सुनिता भंडारी ने नव वर्ष पर शुभकामनाएँ प्रेषित की। तेयुप उपाध्यक्ष महेंद्र भंसाली ने आभार ज्ञापन किया। श्रावक-श्राविकाओं एवं ज्ञानशाला के अभ्यार्थियों ने भी अभिवन सामायिक फेस्टिवल में सहभागिता दर्ज कराई।

टीपीएफ ने किया साइक्लोथॉन और योगा का आयोजन

दिल्ली।

हर जरूरतमंद बच्चे को शिक्षा और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता अभियान के अंतर्गत दिल्ली में टीपीएफ ने साइक्लोथॉन साइकिल रेसिंग कार्यक्रम का आयोजन अणुव्रत भवन, दिल्ली में किया। कनॉट प्लेस के इनर सर्किल से वापस अणुव्रत भवन की सात किलोमीटर की इस रेस में महिलाओं, बच्चों सहित सभी उम्र के लोगों का रूझान रहा। इसमें १०० से ज्यादा लोगों ने भाग लिया। शासनश्री साध्वी संघमित्रा जी ने मंगलपाठ सुनाया।

इस कार्यक्रम में तेरापंथ के सभी गुरुओं की फोटो का-२०२३ का कैलेंडर लॉन्च किया गया। इसमें बजरंग लक्ष्मीपत बोथरा इपैक ग्रुप, सुशील जैन पायनियर ग्रुप, टाइम्स आर्ट के हीरालाल गेलड़ा और दिव्य कैपिटल के अशोक सुशील का आर्थिक सहयोग रहा।

इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि लक्ष्मीपत बोथरा ने टीपीएफ की सभी सामाजिक गतिविधियों को सराहते हुए जरूरतमंद बच्चों की पढ़ाई में किसी भी तरह की सहायता का आश्वासन दिया। टाइम्स आर्ट के हीरालाल गेलड़ा ने रमेश कांडपाल द्वारा योगा कार्यक्रम को सराहा और हर महीने इस तरह के कार्यक्रम फोरम को करने की सलाह दी। सभी सदस्यों को इस अवसर पर मेडल देकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन टीपीएफ के उपाध्यक्ष श्रेणिक जैन और मंत्री कविता बरड़िया ने किया। साइक्लोथॉन के संयोजक अनिल रांका थे। इस अवसर पर टीपीएफ के नॉर्थ जोन के अध्यक्ष विजय नाहटा और एनईसी सदस्य सपना जैन, उपाध्यक्ष पांची जैन, दिल्ली सभा से मंत्री प्रमोद घोड़ावत, नवनीत दुगड़, रोहित जैन, मन्नालाल बैद, प्रीति दुगड़ सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।

अहंकार पतन का और विनय उत्थान का कारण बन सकता है : आचार्यश्री महाश्रमण

सिवांची-मालाणी संस्थान, ५ जनवरी, २०२३

जन-जन को सन्मार्ग बताने वाले आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः १० किलोमीटर का विहार कर सिवांची-मालाणी क्षेत्रीय संस्थान में पधारे। यह संस्थान पूरे सिवांची-मालाणी का प्रतिनिधित्व करने वाला संस्थान है।

वर्तमान के महावीर आचार्यप्रवर ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि किसी के घर में लक्ष्मी आना चाहती है, लक्ष्मी द्वार के बाहर तक पहुँच गई है, दिव्य लक्ष्मी प्रवेश के लिए इच्छुक है, परंतु घर का मालिक हाथ में डंडा लेकर द्वार पर आता है और दिव्य लक्ष्मी से कहता है कि खबरदार है, मेरे घर में आई तो। वह संसार में कितना अभागा आदमी होगा। यह एक लौकिक उदाहरण हो सकता है।

इसी प्रकार किसी साधु को कोई शिक्षा दे, विनय के बारे में, हित-भलाई की शिक्षा दे, जिसको प्रेरणा दी जा रही है, वह साधु कुपित हो जाता है, मुझे क्यों बार-बार शिक्षा देते हो। अच्छी शिक्षा और विनय के संदर्भ में वह साधु कुपित हो शिक्षा को ग्रहण नहीं करता है, मानो कि वह डंडे से आती हुई गुणरूपी लक्ष्मी को अपने जीवन में प्रवेश करने से रोकता है।

हमारे जीवन में विनय एक महत्त्वपूर्ण सद्गुण होता है। विनय है, तो विद्या भी आ सकती है। ज्ञान सीखना है और ज्ञान देने वाले के प्रति विनय नहीं और ज्ञान के प्रति भी विनय नहीं तो उसमें कितना ज्ञान आ सकेगा और आ जाएगा तो वह उसका कितना सम्यक्, उपयोग कर पाएगा। अविनयता-अहंकारशीलता तो पतन का हेतु बन ही सकते हैं। अहंकार मदिरापान के समान है। साधु को तो इनको त्यागना चाहिए।

अहंकार पतन का और विनय उत्थान का कारण है। साधु अभिवादनशील सेवा-सुश्रुषा करने वाला है, उसकी चार बातें होती हैं—आयुष्य वृद्धि, विद्या का विकास, यश का विकास और बल का विकास।

अनुशासन में समुचित वही रह सकता है, जिसमें विनय का भाव हो। किसी को घमंड नहीं करना चाहिए। शिष्यों के संदर्भ में गुरु का भोजन है—शिष्य की भक्ति-विनय। आचार्यप्रवर ने मुनि धर्मरुचि से निवेदन किया कि आप बताओ कि उत्तरवर्ती आचार्य का क्या कर्तव्य होता है? मुनिश्री ने बताया कि उत्तरवर्ती आचार्य का कर्तव्य होता है कि वह पूर्वाचार्य को स्थापित करे। मुनि कुमार श्रमण जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी ने फरमाया था कि इस प्रश्न का उत्तर उत्तरवर्ती आचार्य ही दे। उस समय पूज्यप्रवर जब मुनि महाश्रमण अवस्था में उत्तर दे रहे थे वो आचार्यश्री तुलसी के प्रश्न से बैठने लगे तो, आचार्यश्री ने कहा बैठते क्यों हो उत्तर दो।

पूज्यप्रवर ने कहा कि इसका सारांश यही है कि पूर्वाचार्यों के प्रति भी विनय का भाव रहना चाहिए। रत्नाधिक साधुओं को आचार्य भी वंदन करते हैं। आचार्य के लिए तो अपेक्षित है कि वे बड़े संतों को तिक्खुते से वंदना करें पर बड़े संतों के लिए अपेक्षित नहीं है कि वो तिक्खुते से आचार्य की वंदना करे। वंदन संयम पर्याय का हो रहा है। पंच पद वंदना में भी बड़े संत से अगर आचार्य दीक्षा पर्याय में छोटे हैं, तो तीसरे पद में आचार्य का नाम न लें। ऐसी परंपरा रही है। आचार्य के लिए बड़े संत वंदनीय होते हैं। आदेश-निर्देश का अधिकार तो आचार्य के पास ही होता है।

मुनि कुमारश्रमण को २१ कल्याणक एवं मुनि धर्मरुचि जी को दो महीने विगय-वर्जन की बख्शीष करवाई।

पूज्यप्रवर ने हाजरी का वाचन करते हुए प्रेरणाएँ प्रदान करवाई। नव दीक्षित साधु-साध्वियों ने लेख पत्र का वाचन किया। सभी को २१-२१ कल्याणक बख्शीष करवाए। नव दीक्षित साध्वियों ने संतों की वंदना की। मुनि धर्मरुचि जी ने संतों की ओर से मंगलकामना प्रेषित की।

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि आज हम सिवांची-मालाणी क्षेत्रीय संस्थान में आए हैं। यह संस्थान जितना हो सके धार्मिक-आध्यात्मिक गतिविधियों के संचालन का प्रयास करे। पूरे सिवांची-मालाणी में भी धार्मिक-आध्यात्मिक भावना रहे।

पूज्यप्रवर के स्वागत में संस्थान के अध्यक्ष श्रीडूंगरचंद सालेचा, सामूहिक गीत, मुंबई के कस्टम कमिश्नर अशोक कोठारी, माणक कोठारी-संकलेचा परिवार द्वारा गीत, तुलसी किड्स स्कूल के बच्चे, बायतू कन्या मंडल, टीना देवी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

टीना देवी ने १६ की तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्यप्रवर से लिए।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि हमें सम्यग् ज्ञान को महत्त्व देना चाहिए। आदमी जब जागृति के क्षण में होता है, तो कल्याण की बात कर सकता है।

डॉक्टर से बीमारी और गुरु से गलती न छुपाएँ : आचार्यश्री महाश्रमण

टापरा, ४ जनवरी, २०२३

कड़कड़ाती सर्दी में असाड़ा से प्रातः लगभग ६ किलोमीटर का विहार कर जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी टापरा पधारे। टापरावासियों पर आचार्यों की विशेष अनुकंपा रही है।

महायोगी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि निर्वाण को कौन प्राप्त कर सकता है? आगम के आधार पर इस प्रश्न का हल है कि जिस व्यक्ति के जीवन में आत्मा में धर्म है, वह निर्वाण को प्राप्त कर सकता है। जिसकी आत्मा शुद्ध है, वहाँ धर्म ठहर सकता है।

सरल व्यक्ति में शुद्धता होती है। सरलता होने से शोधि हो सकती है। बोधि भी प्राप्त हो सकती है। प्रायश्चित के संदर्भ में यह सूत्र मानो मार्गदर्शक सूत्र है। प्रायश्चित देने वाला भी अच्छा हो। डॉक्टर से बीमारी, गुरु से गलती न छुपाएँ। सरलता से गुरु उसकी शोधि कर सकते हैं।

सरलता बच्चे जैसी हो। ऋजुता हो, आदमी छल-कपट न करे। साधु तो भोला-सरल ही होना चाहिए। महात्मा वह है जिसके जो मन में है, वो वाणी में है। करता भी वही है जो कहता है। जिसके मन में और, वाणी में और व करता और है, वह दुर्जन व्यक्ति होता है। महात्मा होना खास बात है, मैंने एक किताब आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के जीवन पर लिखी है, उसका नाम भी 'महात्मा महाप्रज्ञ' दिया था।

गृहस्थ भी संयमी-सरल हो सकते हैं। सरलता है तो सच्चाई की आराधना अच्छी हो सकती है। झूठ-कपट का जोड़ा है, तो सरलता और सच्चाई का भी जोड़ा है। सच्चाई की साधना के लिए सरलता हो और ज्यादा नहीं बोलना चाहिए, परिमितभाषिता रखना चाहिए।

तीन आचार्य मारवाड़ से हुए हैं—आचार्यश्री भिक्षु, श्रीमद्जयाचार्य और आचार्यश्री तुलसी। बाड़मेर जिले में, मैं पहले भी अनेक बार आया हुआ हूँ। आज टापरा आना हुआ है। टापरा का धर्मसंघ में सीर है। २०१३ में मर्यादा महोत्सव किया था। सभी अच्छी सेवा-साधना करते रहें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि गांधीजी में दो विशेषताएँ थीं—संयम की साधना और कथनी-करनी में समानता। इस संदर्भ में, मैं पूज्य आचार्यप्रवर को देखती हूँ तो मुझे लगता है कि अनेक विशेषताएँ पूज्यप्रवर के जीवन में भी परिलक्षित होती हैं। आचार्यप्रवर के जीवन में संयम है। मन-वचन और शरीर सधा हुआ है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में टापरा की चारित्रात्माओं में से मुनि रोहित कुमार जी, समणी अक्षयप्रज्ञा जी, साध्वी मनोज्ञयशा जी, समणी प्रणवप्रज्ञा जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर के स्वागत में तेरापंथ सभा अध्यक्ष कांतिलाल गोलेछा, सोनम बडेरा, तेरापंथ महिला मंडल गीत, तेरापंथ की बेटियाँ, तेयुप से संदीप सालेचा ने अपनी भावना अभिव्यक्ति की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

✦ व्यक्ति अनावश्यक बोलने से बचे। कब बोलना व कब मौन रखना सापेक्ष बात है। कब, कहाँ व कैसे बोलना–इसका विवेक अपेक्षित है।

–आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मकल्याण के लिए सच्चाई की साधना करना जरूरी : आचार्यश्री महाश्रमण

जसोल, ७ जनवरी, २०२३

पूज्यप्रवर का जसोल प्रवास का दूसरा दिन। तीर्थंकरतुल्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि अठारह पाप स्थान-पाप बताए गए हैं। इस संदर्भ में तीन चीजें धातव्य हैं–अतीत, वर्तमान और भविष्य। अठारह पापों के संदर्भ में इन तीनों को तत्त्वज्ञान के संदर्भ में बताने का प्रयास कर रहा हूँ।

पहला पाप है–प्राणातिपात। तीन चीजें हैं–एक प्राणातिपात पाप स्थान। दूसरा प्राणातिपात पाप की प्रवृत्ति और तीसरा प्राणातिपात पाप का बंध। हमारे अतीत में जो मोहनीय कर्म बंधा हुआ है, वो जीव को प्रेरणा देता है। वो उदय में आकर प्रेरणा देता है, तब वर्तमान में जीव प्राणातिपात की प्रवृत्ति करता है। ये आश्रव है, जो वर्तमान में हो रहा है। प्रवृत्ति से फिर कर्म का बंध हो रहा है, वो फिर भविष्य के लिए उदय में आने के लिए कर्म का बंध हो रहा है।

इसी प्रकार सारे पाप कर्मों का अतीत, वर्तमान और भविष्य का ऐसे संबंध जुड़ता है। पिछले बंधे कर्म का उदय होने से प्रेरणा मिलती है और प्रेरणा मिलने से जीव पाप कर्म का बंध आगे के लिए करता है। आदमी मृषावाद बोलता है, उसके चार कारण बताए गए हैं–क्रोध, लोभ, भय और हास्य।

शास्त्र का सूत्र है–सत्य लोक में सारभूत है। आत्मकल्याण के लिए सच्चाई का महत्त्व है। सच्चाई में हम गहराई से देखें तो कौन-सा वाक्य मेरा पूर्ण सच्चाई वाला हो सकता है, उस ओर ध्यान जाए तो मृषावाद की साधना उच्च कोटि की हो सकती है।

हर सच्ची बात को कहना जरूरी नहीं है। झूठ नहीं बोलना जरूरी है। मृषावाद पुष्ट रहे इसके लिए भाव शुद्धि जरूरी है। उपयोगिता हो तो बोलो। कषाय की मंदता हो। साधु भाषा समिति का ध्यान रखे। इन पर साधु ध्यान दे तो मृषावाद की साधना अच्छी हो सकती है। सावद्य भाषा से बचा जा सकता है।

जसोल से अनेक चारित्रात्माएँ व समणियाँ हैं। मैंने २०१२ के जसोल चातुर्मास को ऐतिहासिक दुर्लभ कहा था, उसका अब खुलासा है कि उस चातुर्मास में हमें साध्वीवर्या मिली थी। चार वर्ष ही दीक्षा लिए हुए थे और साध्वीवर्या के रूप में सामने आ गई। इतनी कम उम्र में इतने उच्च स्थान पर आने वाली संभवतः

तेरापंथ में आचार्य भिक्षु के सिवाय कोई आ गए हो।

दूसरी बात मैंने कही थी कि सिद्ध चातुर्मास है। उस समय दो साध्वीजी के संथारे सीजे थे। साध्वी भीखांजी और साध्वी वैराग्यश्री जी। इस बार तो और विशेष बात हो गई कि दंपति के संथारा। आज तक आगे इतिहास में देखने-सुनने, जानने में नहीं आया है। पुखराजजी के तो पहले से था। उनकी धर्मपत्नी गुलाबबाई को मैंने कल संथारा पचखाया था।

वर्तमान में धर्मसंघ में ५५० के करीब साध्वियाँ हैं। वर्तमान में साध्वियों में सर्वोच्च स्थान पर तो साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी हैं। नंबर दो पर साध्वीवर्या हैं। दोनों खूब सेवा देती रहें। चित्त समाधि रहे। कुछ-कुछ साधु-साध्वियों का विशेष योगदान प्राप्त हो रहा है। गुरुकुलवास में भी और न्यारा में भी।

गुरुकुलवास में जसोल के संत कोई-कोई अच्छी सेवा दे रहे हैं, उनको नजर बिलकुल न लगे। उनमें योग्यता-प्रतिभा है। इतने कार्य कर्मठता से कार्य कर रहे हैं। वो अपने आप संभालते रहते हैं। सिवांची-मालाणी से देखें तो कई ऐसी चारित्रात्माएँ गुरुकुलवास में सेवा देने में कर्मठ हैं। न्यारा में भी हैं। जसोल अच्छा क्षेत्र है। ज्ञानशाला ने भी कल अच्छा कार्यक्रम किया था। तीन संतानें धर्मसंघ को दी। महादानी श्रावक सोहनलाल सालेचा का विशेष योगदान रहा।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि भौतिक पदार्थों से सुख तो मिल सकता है, पर वह सुख क्षणिक है। हमें स्थायी सुख प्राप्त करना है, उसके लिए हमने उस अध्यात्म के मार्ग को स्वीकार किया है। हमें भीतरी जगत में प्रवेश करना होगा। भीतर में प्रवेश के लिए हमें प्रेक्षाध्यान का मार्ग अपनाना पड़ेगा।

साध्वी स्थितप्रभा जी की स्मृति सभा पूज्यप्रवर ने साध्वी स्थितप्रभा जी का जीवन परिचय संक्षेप में बताते हुए फरमाया कि वे-समण श्रेणी में प्रथम नंबर की समणी थी। समण श्रेणी में पीएच०डी० करने वाली भी प्रथम समणी थी। गंभीर स्थिति के कारण कुछ दिन पहले साध्वी कनकश्री जी के हाथों दीक्षा हुई थी और संथारा भी किया था। पूज्यप्रवर ने मध्यस्थ भावना से चार लोगस्स का ध्यान करवाया।

मुख्यमुनि महावीर कुमार जी, साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी, साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी, समणी नियोजिका अमलप्रज्ञा जी, समणी कुसुमप्रज्ञा जी, समणी मधुरप्रज्ञा जी, समणी अक्षयप्रज्ञा जी, समणी प्रतिभाप्रज्ञा जी, समणी मृदुप्रज्ञा जी, समणी पुण्यप्रज्ञा जी, समणी निर्मलप्रज्ञा जी, समणीवृंद समूह गीत, साध्वी युक्तिप्रभा जी, मुनि दिनेश कुमार जी ने भी अपनी श्रद्धाभावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर के स्वागत में ग्राम पंचायत सरपंच ईश्वर सिंह चौहान, अणुव्रत समिति से अशोक कोठारी आदि ने अणुव्रत संकल्प-पत्र, मुमुक्षु आयुषी, मुमुक्षु वीनु ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। मुनि कीर्तिकुमार जी एवं मुनि विश्रुतकुमार जी ने गुरुवर के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

साध्वी स्थितप्रभा जी का देवलोकगमन

जयपुर।

नव दीक्षित साध्वी स्थितप्रभा जी का दिनांक ३१ दिसंबर, २०२३ को सायं ७:२५ बजे संथारा अवस्था में देवलोकगमन हो गया।

आपका जन्म लाडनूं में सन् ५-४-१९५५ में हुआ। आपके पिता का नाम अनोपचंद घीया एवं माता का नाम केशर देवी घीया था। आप दो भाई, दो बहनें थी। आपका संस्था में प्रवेश सन् १९७३ में हुआ।

दीक्षा : विलक्षण दीक्षा, छः दीक्षार्थियों में प्रथम, आचार्यश्री तुलसी द्वारा कार्तिक शुक्ला द्वितीया, लाडनूं, १९८०

शिक्षा : एम०ए० जीवन विज्ञान एवं योग, एम०ए० जैन दर्शन, एम०ए० प्राकृत एवं जैनागम, एम०ए० अहिंसा एवं शांति।

संबोधि एक समीक्षात्मक अध्ययन विषय पर समण श्रेणी की प्रथम डॉक्टर।

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय-जीवन विज्ञान विभाग की श्रेणी की प्रथम विभागाध्यक्ष रही।

ग्यारह व्यक्तियों को पीएच०डी० करवाई।

दायित्व बोध : जैन विश्व भारती का साधना विभाग (तुलसी अध्यात्म नीडम)

पुस्तक लेखन : प्राण चिकित्सा, गाथा एक तपस्विनी की।

संपादन : प्रेक्षाध्यान पत्रिका का चार वर्ष तक जीवन विज्ञान पत्राचार के अनेक पाठ लिखे।

संकलन : संभव है समाधान, अमूर्त चिंतन, चित्त और मन जीवन विज्ञान एवं प्रेक्षाध्यान के क्षेत्र में भी बहुत कार्य किया।

यात्रा : समण श्रेणी की प्रथम एक साल की सुदूर यात्रा की और साथ ही भारत के अनेक प्रांतों का भ्रमण किया। पिछले कुछ वर्षों से लाडनूं में स्थायी प्रवास।

तपस्या : वर्षीतप, तेरापंथ धर्मसंघ की प्रथम मोय पडिमा, उपवास, बेला, तेला, अठाई आदि।

साध्वी दीक्षा : 'शासन गौरव' साध्वी कनकश्री जी के मुखारविंद से ३१ दिसंबर, २०२२, जयपुर।

संथारा : चौविहार संथारा, ३१ दिसंबर, २०२२, ६-१३ मि० पर, जयपुर 'शासन गौरव' साध्वी कनकश्री जी द्वारा।

परिवार से दीक्षित : साध्वी कानकुमारी जी, शासन गौरव साध्वी कनकश्री जी।

विशेष : समणी स्थितप्रज्ञा जी की संकल्प शक्ति अटूट थी और आस्था बल पुष्ट था। उनके शरीर की स्थिति देखने वाले द्रवित हो जाते पर वो चट्टान की भाँति मजबूत थी, ध्यान, जप, स्वाध्याय आदि में तल्लीन रहती एवं सबको यही प्रेरणा देती रहती। आपके सामने जो भी कार्य आता, पूरे मनोयोग से उसे संपन्न करती। आस्था, संकल्प और जप की त्रिपदी उन्हें स्वास्थ्य का वरदान देती रही। वह एक निर्भीक और साहसी व्यक्तित्व की धनी थी। साध्वी स्थितप्रभा जी की बैकुंठी यात्रा भिक्षु साधना केंद्र, श्यामनगर से रवाना होकर आदर्श नगर मोक्षधाम पहुँची। जहाँ पारिवारिक जनों की उपस्थिति में अंतिम संस्कार किया गया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**